"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2019-20

दि. 18/09/2019

नोटिस

वरीष्ठ महाविद्यालय के हिंदी विभाग के बी. ए. भाग एक, दो और तीन के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि शैक्षिक वर्ष 2019-20 का पहले सत्र का अंतर्गत मूल्यमापन (होम असाइमेंट/ टेस्ट/ सेमिनार /प्रोजेक्ट) दि. 05/10/2019 तक कमरा क्रमांक - 23 में जमा करें।

डॉ. आरिफ महात
विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, विवेकानंद कॉलेज,
कोल्हापूर.

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

(2)

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 1

Max Marks : 10

Subject : HINDI COMP

Subject Code : GEC-1012A

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
1	A4503	Locked	8
2	A4510	Locked	7
3	A4511	Locked	Absent
4	A4516	Locked	9
5	A4517	Locked	8
6	A4530	Locked	Absent
7	A4534	Locked	8
8	A4540	Locked	8
9	A4544	Locked	6
10	A4546	Locked	Absent
11	A4549	Locked	9
12	A4550	Locked	9
13	A4553	Locked	Absent
14	A4557	Locked	Absent
15	A4558	Locked	9
16	A4566	Locked	8
17	A4568	Locked	10
18	A4569	Locked	10
19	A4575	Locked	10
20	A4581	Locked	9
21	A4582	Locked	7
22	A4596	Locked	9
23	A4603	Locked	9
24	A4605	Locked	9
25	A4615	Locked	9
26	A4623	Locked	9
27	A4637	Locked	9
28	A4642	Locked	Absent
29	A4649	Locked	9
30	A4655	Locked	10
31	A4659	Locked	10
32	A4660	Locked	10
33	A4661	Locked	10

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
34	A4671	Locked	Absent
35	A4682	Locked	10
36	A4689	Locked	10
37	A4706	Locked	10
38	A4707	Locked	10
39	A4708	Locked	9
40	A4713	Locked	9
41	A4715	Locked	9
42	A4720	Locked	9
43	A4724	Locked	6
44	A4728	Locked	10
45	A4742	Locked	10
46	A4754	Locked	5
47	A4762	Locked	9
48	A4770	Locked	9
49	A4772	Locked	10
50	A4773	Locked	10
51	A4777	Locked	9
52	A4784	Locked	10
53	A4792	Locked	10
54	A4793	Locked	10
55	A4799	Locked	Absent
56	A4815	Locked	Absent
57	A4817	Locked	Absent
58	A4820	Locked	10
59	A4824	Locked	9
60	A4833	Locked	10
61	A4837	Locked	10
62	A4846	Locked	10
63	A4847	Locked	9
64	A4848	Locked	9
65	4849	Locked	9
66	A4855	Locked	9

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 1

Max Marks : 10

Subject : HINDI COMP

Subject Code : GEC-1012A

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
67	A4859	Locked	9
68	A4871	Locked	9
69	A4879	Locked	9

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

" ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार "
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Signature of Supervisor

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's
VIVEKANAND COLLEGE (Autonomous), KOLHAPUR

Class F.Y.B.A.I Div A Roll No. 4549

Suppliment No. Subject Hindi (com.)

Test / Tutorial No. पुष्पक संजय चव्हाण

कफन कहानी की कथावस्तु लिखिये।

लेखक परिचय :-

प्रेमचंद हिन्दी के युगप्रवर्तक साहित्यकार माने जाते हैं। इनका जन्म वाराणसी जिले के लहमी गाँव में सन् 1880 में हुआ। उनका वास्तविक नाम 'धनपतराय' था। पहले वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। उर्दू में लिखा उनका कहानी संग्रह 'सोजे वतन' 1907 में प्रकाशित हुआ, जिसे अंग्रेज सरकारने जब्त कर लिया। कालान्तर में वे हिन्दी में 'प्रेमचंद' नाम से लिखने लगे और उनका यह नाम कथा साहित्य में अमर हो गया। प्रेमचंद की पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' सन् 1916 में प्रकाशित हुई और अन्तिम 'कफन' 1936 में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद ने अपने जीवनकाल में लगभग 300 कहानियों की रचना की, जो 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में प्रकाशित हुई है।

प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से 31 जुलाई, 1980 को इनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया।

कथावस्तु :-

प्रेमचंद की 'कफन' कहानी घीसू या माधव की कहानी ही नहीं बया करते, वे इसके माध्यम से विषम समाज में मानवीय विवशता, मानवीय करुणा और मानवीय गरिमा उद्घाटित करते हैं।

Scanned by CamScanner

कफन कहानी सामन्तवादी शोषण का शिकार, भूमिहीन किसानों के व्यक्तित्व के विघटन और अमानवीकरण की भयावह त्रासदी को सामने लाती है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण पर आधारित समाज-व्यवस्था में घीसू और माधव जैसे व्यक्ती विपन्नता और मंहगाई से परम संतुष्ट हैं क्योंकि जिस समान में वे रहते हैं वह सामन्ती मूल्यों वाला समाज है, जिसमें परिश्रम का कोई मूल्य नहीं, बल्की परिश्रम दूसरों के लाभ के लिए किया जाता है। यह सोचकर की श्रम करने श्रम न करने से किसी भी मायने में बेहतर नहीं, वे श्रम और इसके फल के प्रति लगाव खो बैठते हैं और धीरे-धीरे निकम्मेपन का शिकार हो जाते हैं।

समाज में रात-दिन मेहनत करनेवालों की हालत उनकी हालत से बहुत कुछ अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे। वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था, जो किसानों के विचारशून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की मण्डली में जा मिला था, हाँ उसमें यह शक्ति न थी कि बैठकबाजों की नियम और निति का पालन करता। उसपर सारा गाँव उँगली उठाता था। फिर भी उसे यह तस्कीन तो थी ही कि अगर फटेहाल है, तो कम से कम उसे किसानों की जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती। उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग फायदा तो नहीं उठाते। अपने निकम्मेपन से भले ही घीसू और माधव शीर्षिकों को अंगूठा दिखा दे, किन्तु विडंबना यह है कि भूख के सर्वग्रासी

आक्रमण में वे संपूर्ण मानवीय शीलगुणों और कर्तव्य-बोध से वंचित हो जाते हैं। त्रासदी यह है की उनकी मानवीय चेतना इस हद तक जड़ हो जाती है कि बुधिया की प्रसव-संवेदना की पछाड़ और दिल दिला देने वाली चीखों से निरपेक्ष बाप-बेटा चोरी के भुने हुए आलुओं पर टूट पड़ने की प्रतिस्पर्धी है।

माधव को भय था की वह कोठरी में गया तो, घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ कर देगा। इसलिए वो अपनी पत्नी के पास नहीं जाता। ओझा को एक रुपया देने की संभावना से भी मुग्ध घीसू, माधव इस प्रतीक्षा में हैं कि बुधिया मर जाये तो ये आराम से सोचें। और माधव की पत्नी धन के अभाव के कारण मर जाती है। उसकी दाह-क्रिया के लिए समाज चन्दा इकट्ठा करके माधव को देता है। वे दोनों लकड़ी और कफन खरीदने के लिए बाजार जाते हैं। सर्वप्रथम वे निश्चय करते हैं की चन्दे में लकड़ियों के आजाने के कारण अब लकड़ी खरीदने की आवश्यकता नहीं। कई बजारों की दुकानें देखने के पश्चात वे दोनों अनायास ही मानो किसी दैवी प्रेरणा से एक मधुशाला में पहुँच जाते हैं। एक शराब की बोतल, चिखौना और तली हुई मछलियाँ लेकर निजी सुख में डूब जाते हैं। घीसू इस सुख का आनन्द लेते हुए कहता है की, कफन लगाने से क्या निकलता? आखिर जल ही जाता, बहू के साथ तो न जाता। माधव आसमान की तरफ देखकर बोला, मानों देवताओं को अपनी निष्पापता का साक्षी बना रहा हो। दुनिया का दस्तूर है, नहीं लोग बामनों को हजारों रुपये क्यों देते हैं। कौन देखता है परलोक में मिलता है या नहीं।

Scanned by CamScanner

खाने के बाद माधव घीसू से कहता है कि वे लोगों को जवाब क्या देंगे? लोग पूछेंगे नहीं, कफन कहाँ है? घीसू हँसा, अबे कह देंगे कि रुपये कमर से खिसक गये। लोगों को विश्वास तो न आयेगा, लेकिन फिर वही रुपये देंगे। घीसू और माधव के अंतर के नग्नतम यथार्थ का उद्घाटन बेलाग होकर लेखक करता है। न जाने कब के भूखे-प्यासे अपमानित और दुखी माधव और घीसू अपने पास रुपयों के आते ही एकाएक अपनी सारी झूठी मर्यादाओं, मान्यताओं को भूलकर अपनी आत्मा की यथार्थतम भूमि पर उतर पड़ते हैं। घीसू, माधव और उस सरीखे लोग इतने समर्थ नहीं की प्रत्यक्षतः इस व्यवस्था का विरोध कर सकें, पर अप्रत्यक्ष : प्रतिकार और प्रतिशोध की चेतना ही उन्हें शराबखाने की ओर ले जाती है। वे कफन के पैसों से कफन न खरीद शराब पीकर समाज में इस महान पुण्य की अवहेलना करके मस्ती की दुनिया में डूब जाते हैं। दार्शनिकता की तरंग में वे स्वर्ग-नर्क का विवेचन करते हैं और उनकी अन्तरात्मा की सच्चाई निर्भीक भाव से कह उठती है, बैकुण्ठ में जायेगी किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं, मरते-मरते हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गयी।

संपूर्ण कहानी, घटना ; प्रसव वेदना से छटपटाती बुधिया की मृत्यु एवं चरित्र; घीसू, और माधव के व्यक्तित्व के विघटनरूप का अतिक्रमण करती व्यापक जीवनस्तर पर मानव-मात्र के अमानवीय होने के संकट को उजागर करती है। ऐसे में कहानी के चरित्र मात्र-पात्र न रह कर प्रतीक बन जाते हैं। उस सांस्कृतिक संकट के, जहाँ चेतना के बुझे हुए अलावों से कहानी शुरु होती है और शराबखाने में चेतना के धराशायी होने से समाप्त होती है।

10/10

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 1

Max Marks : 10

Subject : HINDI OPT -I

Subject Code : DSC-1016A

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
1	A4502	Locked	Absent
2	A4507	Locked	Absent
3	A4513	Locked	10
4	A4519	Locked	10
5	A4525	Locked	Absent
6	A4527	Locked	9
7	A4528	Locked	9
8	A4529	Locked	8
9	A4531	Locked	10
10	A4536	Locked	10
11	A4537	Locked	10
12	A4539	Locked	8
13	A4540	Locked	8
14	A4543	Locked	Absent
15	A4547	Locked	5
16	R4551	Locked	Absent
17	R4553	Locked	Absent
18	A4554	Locked	10
19	A4555	Locked	10
20	A4561	Locked	8
21	R4562	Locked	5
22	A4562	Locked	Absent
23	A4564	Locked	10
24	A4581	Locked	9
25	A4587	Locked	8
26	A4588	Locked	9
27	A4589	Locked	9
28	A4593	Locked	10
29	A4595	Locked	10
30	A4596	Locked	10
31	A4597	Locked	9
32	A4604	Locked	9
33	A4606	Locked	10

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
34	A4607	Locked	8
35	A4609	Locked	9
36	A4613	Locked	8
37	A4617	Locked	10
38	A4618	Locked	10
39	A4619	Locked	9
40	A4622	Locked	10
41	A4624	Locked	8
42	A4627	Locked	9
43	A4629	Locked	8
44	A4630	Locked	8
45	A4631	Locked	9
46	A4632	Locked	10
47	R4633	Locked	Absent
48	A4636	Locked	9
49	A4639	Locked	10
50	A4645	Locked	9
51	R4648	Locked	Absent
52	A4650	Locked	10
53	A4652	Locked	10
54	A4653	Locked	10
55	A4661	Locked	9
56	A4663	Locked	8
57	A4664	Locked	9
58	A4665	Locked	10
59	A4670	Locked	9
60	A4671	Locked	8
61	A4672	Locked	8
62	A4676	Locked	10
63	A4679	Locked	Absent
64	A4681	Locked	9
65	A4691	Locked	10
66	A4693	Locked	10

Name & Signature of Internal Examiner

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 1

Max Marks : 10

Subject : HINDI OPT -I

Subject Code : DSC-1016A

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
67	A4694	Locked	10
68	A4697	Locked	8
69	A4703	Locked	8
70	A4708	Locked	10
71	A4710	Locked	10
72	A4711	Locked	8
73	A4712	Locked	9
74	A4714	Locked	7
75	A4716	Locked	10
76	A4717	Locked	8
77	A4730	Locked	10
78	A4731	Locked	10
79	A4732	Locked	10
80	A4733	Locked	7
81	A4734	Locked	10
82	A4735	Locked	10
83	A4736	Locked	10
84	A4737	Locked	10
85	A4739	Locked	5
86	A4744	Locked	8
87	A4745	Locked	7
88	A4746	Locked	9
89	A4747	Locked	10
90	A4751	Locked	5
91	A4756	Locked	10
92	A4757	Locked	10
93	A4765	Locked	8
94	A4766	Locked	9
95	A4771	Locked	10
96	A4774	Locked	9
97	A4782	Locked	8
98	A4783	Locked	9
99	A4789	Locked	8

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
100	A4790	Locked	10
101	A4791	Locked	10
102	A4794	Locked	10
103	A4795	Locked	7
104	A4801	Locked	9
105	A4802	Locked	8
106	A4803	Locked	8
107	A4804	Locked	9
108	A4805	Locked	8
109	A4806	Locked	10
110	A4810	Locked	10
111	A4811	Locked	10
112	A4813	Locked	8
113	A4814	Locked	8
114	A4816	Locked	8
115	A4819	Locked	9
116	A4823	Locked	9
117	A4828	Locked	10
118	A4832	Locked	7
119	A4835	Locked	10
120	A4838	Locked	9
121	A4840	Locked	8
122	A4847	Locked	10
123	A4848	Locked	10
124	A4850	Locked	Absent
125	A4851	Locked	10 09
126	A4852	Locked	9
127	A4853	Locked	10
128	A4855	Locked	10
129	A4858	Locked	8
130	A4861	Locked	8
131	R4862	Locked	Absent
132	A4865	Locked	7

Name & Signature of Internal Examiner

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR

Name & Signature of External Examiner

A4849 – Ab

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 1

Max Marks : 10

Subject : HINDI OPT -I

Subject Code : DSC-1016A

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
133	A4866	Locked	5
134	A4869	Locked	10
135	R4882	Locked	Absent
136	A4893	Locked	7
137	A4894	Locked	7
138	A4908	Locked	10
139	A4909	Locked	Absent

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks

✓ 4719 — 9
4829 — 9
✓ 4754 — 8
4887 — 8
4910 — 8

Amalaj
Dr. A. S. Malaj

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416003

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

" ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार "
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Signature of Supervisor

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's
VIVEKANAND COLLEGE (Autonomous), KOLHAPUR

नाव - वर्षा जयवंत गायकवाड

Class BA I Div Roll No. 4581

Supplment No. Subject HINDI OPL

Test / Tutorial No. Home Assignment

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से इस निबंध का सारांश लिखिए

रामधारी सिंह 'दिनकर'

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक निबंध है। इसमें लेखक ने ईर्ष्या की उत्पत्ति का कारण एवं उससे होने वाली हानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। साथ ही ईर्ष्या से विमुक्ती का साधन भी प्रस्तुत किया है। लेखक कहता है कि उसके घर के दाहिनी तरफ एक वकील साहब रहते है जिसके पास सुख-साधन है परंतु वे फिर भी सुखी नही है। उनके अंदर कौन सी अग्नि जल रही है वह मैं जानता हू। उसका नाम ईर्ष्या है क्योंकि उसके बराबर में रहने वाले बीमा एजेंट अधिक संपन्न है। उनके पास मोटर व अच्छी मासिक आय है। वकील साहब अपनी सुविधाओं का आनंद न उठाकर केवल बीमा एजेंट की सुविधाओं को आनंद न प्राप्त करने की चिंता में जल रहे है। ईर्ष्या मनुष्य को यही वरदान देती है जिसमें मनुष्य बिना दुःख के दुःख भोगता है। जिस व्यक्ति के मन में ईर्ष्या वास करने लगती है वह उन चीजो का आनंद नही ले पाता जो उनके पास होती है, वह उन वस्तुओं के लिए दुःख उठाता है, जो दूसरे व्यक्तियों के पास होती है। वह अपनी तुलना निरंतर दूसरो के साथ करता रहता है। ईर्ष्यालु व्यक्ति असंतोषि प्रकृति के होते है वे भगवान द्वारा दिए गए उपवन अर्थात सुख सुविधाओं को पाकर उसका धन्यवाद करने व आनंद लेने के विपरीत इस चिंता में मग्न रहते है कि मुझे बड़ा उपवन (अधिक सुविधाए) क्यों प्राप्त नही हुआ। इसके लिए वह लगातार विचार करते हुए अपनी

Scanned by CamScanner

उन्नति के प्रयोगो को छोडकर दूसरो को हानी पोहचाने के प्रयत्न करने लगता है। लेखक ने इर्ष्या की बडी बेटी का नाम निंदा बताया है। इर्ष्या के कारण ही व्यक्ति दूसरो की निंदा करता है जिससे वह व्यक्ति दूसरो के नजरो जाए और स्वंय दूसरो के नजरो में श्रेष्ठ बन जाए। परंतु आज तक ऐसा नही हुआ। निंदा के कारण कोई भी व्यक्ति नजरो से नही गिरता बल्कि उसके गिरने का कारण कोई भी उसके गुणो का ह्रास है। इर्ष्या का काम जलाना है। सबसे पहले यह उसको जलाती है जिसके हृदय में वास करती है। चिंता को चिता कहा जाता है, क्योंकि चिंता मे मग्न व्यक्ति का जीवन खराब हो जाता है, परंतु इर्ष्या तो चिंता से भी बुरी है क्योंकि इसमें मनुष्य के मौलिक गुण समाप्त हो जाते है।

इर्ष्या किसी मनुष्य का शारीरिक दोष होने के साथ - साथ उसके जीवन आनंद में भी रुकावट डालती है। उसे जीवन का सुख नजर भी नही आता है। जो व्यक्ति अपने प्रतिद्वंद्विता से संबंधित होता है प्रतिद्वंद्विता से मनुष्य का विकास होता है किंतु आप संसार का लाभ चाहते है तो ___ के अनुसार आप स्पर्धा नेपोलियन से करेंगे। नेपोलियन भी सीजर से और सीजर भी हरकुलिस से प्रतिस्पर्धा रखता था। अर्थात सभी प्रतिभाशाली व्यक्ति स्वंय से श्रेष्ठ लोगो से प्रतिस्पर्धा करते है।

जो व्यक्ति सादा व सरल है वह यह सोचकर परेशान होता है कि दुसरे व्यक्ति मुझसे इर्ष्या क्यों करते है। ईश्वरचंद्र विश्वाससागर भी कहते है कि तुम्हारी निंदा वही करता है जिसकी तुमने भलाई की है। और जब महान लेखक नीत्से इसमें होकर गुजरे तो इसे उन्होंने इसे बाजार में भिनभिनानेवाली मक्खियाँ बताया जो सामाने व्यक्ति की प्रशंसा और पीठ पीछे उसी की निंदा करती है। ये मक्खियाँ हमारे अंदर व्याप्त गुणों के लिए हमें सजा देती है और अवगुणो को माफ कर देती है।

उन्नत चरित्र वाले व्यक्ति इर्ष्यालु व्यक्तियों की बातों पर नही चिढते क्योंकि इर्ष्यालु व्यक्ति तो स्वंय ही छोटी प्रवृत्ती के होते है मगर छोटी सोचवाले व्यक्ति संपन्न लोगों की निंदा को ही

सही मानते है. क्योंकि उन्हे लगता है कि हम इन लोगो का जितना भी भला करे ये हमारा बुरा ही करेंगे। ऐसे व्यक्ति निंदा का उत्तर न देने वाले लोगो को उनका अहंकार समझते है. अगर हम भी उनके जैसे बन जाते है तो वे खुश हो जाते है। नीत्से ने भी कहा है आदमी के गुणो के कारण भी लोग उनसे जलते है। इन इर्ष्यालु लोगो से बचने के उपाय है कि एकांत में रहा जाए। जो लोग संसार में नए मूल्यो का निर्माण करते है वो इनसे दूर ही रहते है. और इर्ष्या से बचने के लिए इर्ष्यालु व्यक्ति को सोच - विचार की आदत का त्याग कर देना चाहिए। उसे अपनी सुविधाओ के अभाव को दूर करने का रचनात्मक उपाय खोजना चाहिए। इस उपाय को खोजने की ललक उसके अंदर इर्ष्या को समाप्त कर देगी।

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019
Course : B.A. SEM 3
Max Marks : 10

Subject : HINDI OPT-III
Subject Code : DSC-1016C1
Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
1	C5003	Locked	10
2	C5008	Locked	10
3	C5012	Locked	10
4	C5017	Locked	Absent
5	C5018	Locked	10
6	C5023	Locked	8
7	C5024	Locked	9
8	C5029	Locked	10
9	C5031	Locked	10
10	C5036	Locked	10
11	C5044	Locked	10
12	C5052	Locked	10
13	C5059	Locked	8
14	C5063	Locked	9
15	C5064	Locked	10
16	C5067	Locked	10
17	C5073	Locked	10
18	C5074	Locked	~~Absent~~ 10
19	C5075	Locked	Ab
20	C5078	Locked	7
21	C5079	Locked	7
22	C5084	Locked	~~10~~ 9
23	C5085	Locked	10
24	C5091	Locked	10
25	C5095	Locked	10
26	C5099	Locked	10
27	C5100	Locked	10
28	C5101	Locked	10
29	C5102	Locked	10
30	C5106	Locked	10
31	C5112	Locked	10
32	C5114	Locked	10
33	C5115	Locked	10
34	C5116	Locked	10
35	C5119	Locked	8
36	C5120	Locked	10
37	C5122	Locked	9
38	C5124	Locked	10
39	C5131	Locked	10
40	C5137	Locked	9
41	C5140	Locked	10
42	C5143	Locked	10
43	C5144	Locked	8
44	C5150	Locked	10
45	C5151	Locked	8
46	C5152	Locked	10
47	C5156	Locked	10
48	C5166	Locked	10
49	C5171	Locked	8
50	C5172	Locked	10
51	C5177	Locked	8
52	C5182	Locked	9
53	C5185	Locked	10
54	C5190	Locked	10
55	C5198	Locked	10
56	C5201	Locked	10
57	C5214	Locked	10
58	C5225	Locked	9
59	C5228	Locked	8
60	C5229	Locked	10
61	C5236	Locked	9
62	C5245	Locked	8
63	C5248	Locked	8
64	C5256	Locked	8
65	C5258	Locked	10
66	C5261	Locked	8

Corrected

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 3

Max Marks : 10

Subject : HINDI OPT-III

Subject Code : DSC-1016C1

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
67	C5264	Locked	9
68	C5269	Locked	10
69	C5279	Locked	10
70	C5284	Locked	9
71	C5285	Locked	8
72	C5288	Locked	9
73	C5293	Locked	10

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
	5255		08

(Dr. Dipak Rama Tupe)

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

" ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार "
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Signature of Supervisor

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's
VIVEKANAND COLLEGE (Autonomous), KOLHAPUR

Class B.A. Sem-III Div Roll No. 5003

Suppliment No. Subject Hindi

Test / Tutorial No. Miss. Iram Nisarahmad Bagwan
Name:

5/5

प्र. तिसरी कसम इस पाठ की कथावस्तू लिखिए।

→ फनीस्वर नाथ रेणू जी का जन्म ४ मार्च 1921 को हुआ। तीसरी कसम 1966 में बनी हिंदी भाषा की नाट्य फिल्म है। फिल्म का निर्देशन बासु भट्टाचार्य ने और निर्माण, प्रसिद्ध, गीतकार शैलेन्द्र ने किया था। यह लेखक फणीस्वर नाथ रेणु की प्रसिद्ध मोर गम गुलफाम पर अधारित है। इस फिल्म के मुख्य कलाकारों में राज कपूर और वहिदा रहमान शामिल हैं। बासु भट्टचार्य द्वारा निर्देशित तीसरी कसम एक फिल्म गैर परंपरागत है। फणीस्वर नाथ रेणू जी का निधन 11 अप्रेल 1977 को हुआ था।

हिरामन गाड़ीवान की पीठ में गुदगुदी है। पिछले बीस साल से गाडी हांकता है हिरामन बैलगाडी सीमा के उस पार मोरंग राज नेपाल से धान और लकडी ढो चुका है। कंट्रोल के जमाने में चोर - बाजारी का माल उस पार से पार पहुँचाया हैं। लेकिन कभी - कभी तो ऐसी गुदगुदी नहीं लगी पीठ में। महाजन का मुनीम उस की गाडी पर गाठों के बीच चुक्की - मुक्की लगाकर छिपा हुआ था। दरोगा साहब डेढ़ हाथ लम्बी चोरबती की रोशनी कितनी तेज होती है, हिरामन जानता है। एक घंटे के लिए आदमी अंधा हो जाता है, एक छटक भी पड़ जाए आंखो पर रोशनी के साथ कडकती हुई ! आवाज - ए - थ

Scanned by CamScanner

गाड़ी रोको ! साले, गोली मार देंगे ऐसे दरोगा चिलाने लगा।

बहुत पुरानी अखज-अदावत होगी दारोगा साहब और मुनीमजी में नहीं तो उतना रूपया कबुलने पर भी पुलिस-दारौगा साहब का मन डोले भला। चार हजार तो गाड़ी पर बैठा-बैठा ही दे रहा था। लाठी से दूसरी बार खोचा ही दे रहा था। लाठी से दूसरी बार खोचा मारा दारोगा ने उसकी आंखो पर रोशनी डाल दी। फिर दो सिपाहियों के साथ सड़क से बीस-पच्चीस रस्सी दूर गाडी के पास ले जाए। गाड़ीवान और गाडियों पर पाँच-पाँच बंदूकवाले सिपाहियों का पहरा। हिरामन समझ गया, इस बार निस्तार नहीं। जेल? हिरामन को जेल का डर नहीं, लेकिन उसके बैल न जाने कितने दिनों तक बिना चारा-पानी के सरकारी फाटक में पड़े रहेंगे। भूखे-प्यासे।। फिर नीलाम हो जाएँगे। भैया और भौजी को वह मुँह नहीं दिखा सकेंगे कभी। नीलाम की बोली उसके कानों के पास गूंज गई एक-दो-तीन। दारोगा और मुनीम में बात पट नहीं रही थी।

घर पहुँचकर दो दीन तक बेसुध पडा रहा हिरामन। होश में आते ही उसने कान पकडकर कसम खाई थी। अब कभी ऐसी चीजों की लदनी नहीं लादेंगे। चोरबाजारी का माल? तोबा, तोबा। पता नहीं मुनीमजीका क्या हुआ। असली इस्पात लोहे की धुरी थी। दोनों पहिए तो नहीं, एक पहिया एकदम नया था। गाड़ी में रंगीत डोरियों के फुंदने बड़े जतन से गुंथे थे। देवी मैया भला करे उस सरकस कम्पनी के बाघ का। पिछले

साल इसी मेले में बाघगाड़ी को ढोनेवाले दोनों घोड़े मर गए। चम्पा-नगर से फारबिसगंज मेला आने के समय सरकस कम्पनी के मैनेजर ने गाड़ीवान-पट्टी में ऐलान करके कहा सौ रुपया भाड़ा मिलेगा। एक-दो गाड़ीवान राजी हुए। लेकिन उसके बैल बाघगाड़ी से दस हाथ दूर ही डर से डिकरने लगे। बाँ-आँ। रस्सी तुड़ाकर भागे। हिरामन ने अपने बैलों की पीठ सहलाते हुए कहा-देखो भैयन, ऐसा मौका फिर हाथ नहीं अवेगा। यही मौका है अपनी गाड़ी बनवाने का। नहीं तो फिर आधीदारी। अरे पिंजड़े में बन्द बाघ क्या डर? मोरंग की तराई में दहाड़ते हुए बाघों को देख चुके हो। फिर पीठ पर मैं तो हूँ।

हिरामन को लगता है, दो वर्ष से चम्पा-नगर मेले की भगवती मैय्या उसपर प्रसन्न हैं। पिछले साल बाघगाड़ी जुट गई। नगद एक सौ रुपए भाड़े के अलावा बुताद, चाह-बिस्कुट और रास्तेभर बन्दर-भालु और जोकर का तमाशा देखा सो फोकट में। और इस बार यह जनानी सवारी। औरत है या चम्पा का फूल। जब से गाड़ी में बैठी है, गाड़ी मह-मह महकती है। अनदेखी औरत की आवाज ने हिरामन को रस में डाल दिया। बच्चों की बोली जैसी महीन, फेनूगिलासी बोली हिरामन की सवारी ने करवट ली। चांदनी पूरे मुखड़े पर पड़ी तो हिरामन चीखते-चीखते रुक गया। अरे बाप! ई तो परी है।

परी की आँखें खुल गईं। हिरामन ने सामने सड़क की ओर मुँह कर दिया और बैलों को टिटकारी दी। वह जीभ को जीभ तालु से सटाकर टि-टि आवाज निकालता है। हिरामन की जीभ

5

न जाने कब से सूखकर लकड़ी जैसी हो गई थी।
भैया, तुम्हारा नाम क्या है? हू-ब-हू फेनुगिलास!
हिरामन के रोम-रोम बज उठे। मुँह से बोली
नहीं निकली। उसके दोनों बैल भी कान खड़े
करके इस बोली को परखते हैं। मेरा नाम है हिरामन
उसकी सवारी मुस्कुराती हैं। मुस्कुराहट में खुशबू
है। तब तो मीता कहूँगी, भैया नहीं। मेरा नाम
भी हिरा है। इस्स। हिरामन को परतीत नहीं,
मर्द और औरत के नाम में फर्क होता है। हाँ
जी मेरा नाम भी हिराबाई है।

रेल्वे लाइन के बगल से बैलगाड़ी के कच्ची सड़क गई है दूर तक। हिरामन कभी रेल पर नहीं चढ़ा है। उसके मन में फिर पुरानी लालसा रेलगाड़ी पर सवार होकर, गीत गाते हुए जगरनाथ जाने की लालसा। उतरकर अपने खाली टप्पर की ओर देखने की हिम्मत नहीं होती है। पीठ मे आज भी गुदगुदी लगती है। आज भी रह-रहकर चम्पा का फूल खिल उठता है। उसकी गाड़ी में एक गीत की टूटी कड़ी पर नगाड़े का ताल कट जाता है बार-बार।

हिरामन ने अपनी जिंदगी में तीन तीन कसमे खाई थीं। हिरामन ने अपनी जिंदगी में पहली कसम यह खाई थी की वह अपने गाड़ी में कभी बाम्बू से बनी हुई चीजें नहीं रखेगा। बास गाड़ी में नहीं रखेगा।

इस प्रकार इस कहानी में उसने खाई हुई कसमों का वर्णन किया हुआ है। इस प्रकार तिसरी कसम कथावस्तू स्पष्ट किया है।

5/5

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 3

Max Marks : 10

Subject : HINDI OPT-IV

Subject Code : DSC-1016C2

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
1	C5003	Locked	10
2	C5008	Locked	10
3	C5012	Locked	10
4	C5017	Locked	Absent
5	C5018	Locked	9
6	C5023	Locked	9
7	C5024	Locked	9
8	C5029	Locked	10
9	C5031	Locked	9
10	C5036	Locked	10
11	C5044	Locked	10
12	C5052	Locked	10
13	C5059	Locked	8
14	C5063	Locked	10
15	C5064	Locked	10
16	C5067	Locked	10
17	C5073	Locked	10
18	C5074	Locked	10
19	C5075	Locked	Absent
20	C5078	Locked	7
21	C5079	Locked	7
22	C5084	Locked	10
23	C5085	Locked	10
24	C5091	Locked	9
25	C5095	Locked	10
26	C5099	Locked	10
27	C5100	Locked	10
28	C5101	Locked	10
29	C5102	Locked	10
30	C5106	Locked	10
31	C5112	Locked	10
32	C5114	Locked	10
33	C5115	Locked	10

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
34	C5116	Locked	10
35	C5119	Locked	9
36	C5120	Locked	10
37	C5122	Locked	8
38	C5124	Locked	9
39	C5131	Locked	10
40	C5137	Locked	10
41	C5140	Locked	10
42	C5143	Locked	9
43	C5144	Locked	10
44	C5150	Locked	10
45	C5151	Locked	8
46	C5152	Locked	10
47	C5156	Locked	10
48	C5166	Locked	8
49	C5171	Locked	9
50	C5172	Locked	10
51	C5177	Locked	9
52	C5182	Locked	9
53	C5185	Locked	10
54	C5190	Locked	10
55	C5198	Locked	8
56	C5201	Locked	8
57	C5214	Locked	10
58	C5225	Locked	6
59	C5228	Locked	8
60	C5229	Locked	8
61	C5236	Locked	8
62	C5245	Locked	10
63	C5248	Locked	8
64	C5256	Locked	8
65	C5258	Locked	9
66	C5261	Locked	7

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1934 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : OCTOBER 2019

Course : B.A. SEM 3

Max Marks : 10

Subject : HINDI OPT-IV

Subject Code : DSC-1016C2

Exam Name : CIE

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
67	C5264	Locked	8
68	C5269	Locked	10
69	C5279	Locked	10
70	C5284	Locked	9
71	C5285	Locked	9
72	C5288	Locked	9
73	C5293	Locked	8

Sr. No.	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
	5255		08

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR 416 003

Dr. A-S. Mahal

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Signature of Supervisor

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's
VIVEKANAND COLLEGE (Autonomous), KOLHAPUR

Class: B.A.-II Div: Roll No.: 5162

Submitted by: पूजा दुर्गाप्पा कोलकार Subject: हिंदी

Test/Tutorial No.: Home Assignment No. 1

प्रश्न. कबीर के पठित दोहों के आधार पर गुरु की महिमा स्पष्ट कीजिए।

गुरु का हर किसी के जीवन में बहुत महत्त्व है। गुरु के महत्त्व का वर्णन शास्त्रों में भी किया गया है। पुराने समय में ऋषि-मुनि ने अपने शिष्यों को शस्त्र विद्या, दर्शनशास्त्र और साहित्यिक ज्ञान देकर उनका मार्गदर्शन करते थे साथ ही समाज के विकास का बीड़ा भी उठाते रहे है।

वर्तमान में गुरु-शिष्य के रिश्ते की परिभाषा ही बदल गई है लेकिन फिर भी इस दोहे के माध्यम से हिन्दी साहित्य के महान कवि कबीर दास जी ने गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के लिए लोगों को प्रेरित किया है। जो गुरुओं को कुछ नहीं समझते है और अपने घमंड में चूर रहते है जिन्हें बाद में निराशा ही हाथ लगती है और वे अपने जीवन में और अपने घमंड में रहने के कारण सफलता हासिल नहीं कर पाते है। गुरु की महिमा हम निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते है।

गुरु गोविंद दोऊ खडे, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताए।।

- कबीर दास जी ने इस दोहे में गुरु की अपार महिमा का वर्णन किया है। कबीर कहते है कि गुरु ने हमें भगवान तक पहुँचाने के रास्ते से अवगत कराया है, इसलिए गुरु और भगवान में से किसी एक के चरण स्पर्श करने का अवसर मिले तो मैं गुरु के चरण स्पर्श करना पसंद करूँगा। इस दोहे में कबीर दासजी ने गुरु की महिमा को ईश्वर से भी बड़ा बताया है। उनके अनुसार गुरु वह व्यक्ति है, जो आपको अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाता है।

हमें हमेशा अपने गुरुओं का सम्मान करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

गुरु-पारस को अन्तरो, जानत है सब सन्त।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लये महन्त ।।

- इस दोहे में संत कबीर दास जी ने गुरु और पारस पत्थर की तुलना करते हुए कहा है कि यह सब सन्त जानते है कि पारस तो लोहे को भी सोना बनाता है, लेकिन गुरु वो होता है जो अपने शिष्यों को महान बनाता है।

संत कबीर के इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है, की हमें अपने गुरु की इज्जत करनी चाहिए क्योंकी गुरु ही अपने शिष्यों को महान बनता है और उनका मार्गदर्शन करता है।

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिले न मोष।
गुरु बिन लखै न सत्य को गुरु बिन मिटै न दोष ।।

- इस दोहे में कबीर कहते है - सांसारिक प्राणियों के बीना गुरु के ज्ञान का मिलना असम्भव है। तब तक मनुष्य अज्ञान रुपी अंधकार में भटकता हुआ मायारुपी सांसारिक बन्धनों में जकडा रहता है जब तक कि गुरु की कृपा प्राप्त नही होती। मोक्ष रुपी मार्ग दिखलाने वाले गुरु है। बिना गुरु के सत्य एवं असत्य का ज्ञान नही होता। उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नही होता फिर मोक्ष कैसे प्राप्त होगा?

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें गुरुजी के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए जाना चाहिए क्योंकी गुरु के बिना सत्य और असत्य की पहचान करना मुश्किल है क्योंकी गुरु ही हमें सच्चाई और सफलता के मार्ग पर चलना सिखाता है।

सब धरती कागज करुँ, लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करुँ, गुरु गुण लिखा न जाए।।

अर्थात कबीर यही मानते है कि पृथ्वी को कागज, जंगल को कलम, सातों समुद्रों को स्याही बनकर लिखने पर भी गुरु के गुण लिखे नही जा सकते। हमारे जीवन में गुरु का महत्व इतना है कि बिना गुरु के हम जीवन में सफल ही नही हो पाएंगे। हमें गुरु के गुण के महत्व को समझना चाहिए क्योंकी गुरु के सिखाए गए

Scanned by CamScanner

गुणों से ही इंसान अपने जीवन में सफलता हासिल कर सकता है। ऐसे सच्चे तथा ज्ञानी गुरु के सहवास में रहकर शिष्य भी ज्ञानी बनता है। उसका अज्ञान रुपी अंधकार मिट जाता है और ज्ञान के उजाले में वह अपने साथ अपने समाज तथा देश का भी उद्धार करता है।

हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहि ठौर ।।

इस दोहे के माध्यम से कवि कबीरदास ने कहा है कि भगवान के रूठने से तो गुरु की शरण रक्षा कर सकती है लेकिन गुरु के रूठने पर कही शरण मिलना सम्भव नही है। जिसे ब्राम्हणों ने आचार्य, बौद्धों ने कल्याणमित्र, जैनों ने तीर्थंकर और मुनि, नाथों तथा वैष्णव, संतो ने उपास्य सद्गुरु कहा है उस भी गुरु से उपनिषद की तीनों अग्नियों भी थर-थर काँपती है। त्रोलोक्यपती भी गुरु का गुणगान करते है। ऐसे गुरु के रूठने पर कही भी ठौर नही।

इस दोहे से हमे सीख मिलती है कि हमें सदैव अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए ~~और हमेशा~~ वो काम करना चाहिए जो गुरु को अच्छा लगे क्योंकी अगर एक बार गुरु नाराज हो जाते है तो उस मनुष्य का जीवन बेकार हो जाता है क्योंकी फिर उसे कोई भी नही पूछता है।

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढि-गढि काढै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

इस दोहे में कवि कबीरदास जी गुरु-शिष्य की तुलना कुम्हार और घडे से कर रहे है। इसमे कवि कह रहे है कि गुरु, एक कुम्हार की तरह है और शिष्य एक घडे की तरह है, अर्थात जिस तरह से कुम्हार, घडे में अंदर से हाथ का सहारा देकर बाहर से चोट मारकर और गढ-गढ कर शिष्य की बुराई को निकालते है। फिर घडे को एक सुंदर आकार देते है उसी तरह गुरु भी अपने शिष्यों की बुराइयो को दूर करते है और उन्हें अच्छाई के रास्ते पर चलना सिखाते है।

कबीर माया मोहिनी, जैसी मीठी खांड।
सतगुरु की किरपा भई, नही तो करती भांड।।

Scanned by CamScanner

कबीर मानते है कि माया ही मनुष्य को संसार के जंजाल में उलझाए रखती है। वह शककर तथा मिसरी के समान मीठी होती है। भोले - भाले लोग उसकी बातों में आकर फस जाते है। संसार के मोहजाल में फसकर अज्ञानी मनुष्य अपने मन में अहंकार, इच्छा, राग और द्वेष के विकारों को उत्पन्न करता रहता है। वह इन्ही विकारों में उलझा रहता है, विकारों से भरा उसका मन, माया के प्रभाव से उपर नही उठ सकता है। कबीर कहते है, सतगुरु की कृपा से मनुष्य माया के मोहजाल से छूट सकता है।

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिए जो गुरु मिलै, तो भी सस्ता जान।।

कबीर इस दोहे में कहते है इस शरीर में सांसारिक विकार व विषयों की एक लंबी जहर की बेल है जो हमें हमेशा उलझाए रखती है। लेकिन गुरुवर इन सब से मुक्त होते है इसलिए उन्हे अमृत की खान कहते है। अहंकार, द्वेष, पाप - कर्म जैसे विकार शरीर में विष की बेल की तरह है। इन विकारों से मुक्ति पाने के लिए गुरु की आवश्यकता पडती है। अगर अपना सर यानी सर्वस्व देकर भी गुरु या गुरु का ज्ञान मिल जाए, तो भी यह सौदा सस्ता समझो। गुरु से ही हमे ज्ञान रुपी अनमोल संपत्ती मिल सकती है, जो तीनों लोको की संपत्ती से भी बढकर है।

कबीर गुर गरवा मिल्या, रलि गया आटें लौंन।
जाति-पाँति, कुल सब मिटे, नाँव धरोंगे कौंन।।

कबीर कहते है कि सतगुरु की कृपा से मुझे गौरवशाली गुरु मिला है। उसकी कृपा से ही में प्रभू से उस प्रकार घुल मिल गया जैसे आटे में नमक मिलाने से दोनों एक दूसरे में घुल मिल जाते है इस प्रकार से घुल मिल जाने से नमक अपना पृथक अस्तित्व भूल जाता है वैसे ही नाम रुप में सामने से मेरा अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।

5/5

Scanned by CamScanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2019 - 20

दि. 14/02/2020

नोटिस

वरीष्ठ महाविद्यालय के हिंदी विभाग के बी. ए. भाग एक, दो और तीन के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि शैक्षिक वर्ष 2019-20 का दूसरे सत्र का अंतर्गत मूल्यमापन (होम असाइमेंट/ टेस्ट/ सेमिनार /प्रोजेक्ट) दि. 05/03/2020 तक कमरा क्रमांक - 23 में जमा करें।

डॉ. आरिफ महात
विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, विवेकानंद कॉलेज,
कोल्हापूर.

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

ok

Office Copy

6

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

ASSESSMENT SHEET-MARCH-APRIL 2020

PROGRAMME B.A.SEM-II

EXAMINATION: SEE

SUBJECT : HINDI OPT - II

SUBJECT CODE : DSC-1016B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
1	ADSOL OMKAR MAHADEV	4502	7	17	24
2	BAGWAN MAHAMADJAID SHOUKAT	4504	8	16	24
3	AITWADE ROHIT RAGHUNATH	4506	7	14	21
4	AKURDE PRITESH SUNIL	4507	7	16	23
5	ANDHALE ANKUSH SHAHADEV	4509	7	14	21
6	ATIGRE SHUBHAM DATTATRAY	4512	7	14	21
7	BHALEKAR RUTURAJ RAGHUNATH	4512	7	14	21
8	AWATE RUTUJA SANJAY	4513	8	29	37
9	BAGADI ASHA KUNDLIK	4514	7	14	21
10	BHOSALE APEKSHA SUNIL	4517	8	25	33
11	BARGIR AARJU ASLAM	4519	9	29	38
12	BHARMAL PRITAM PRABHAKAR	4525	7	14	21
13	BHIVADARNE SUMIT ANANDA	4527	9	23	32
14	BHIVDARNE DIGVIJAY SUNIL	4528	9	24	33
15	BHIVDARNE SHRINATH NAVANATH	4529	9	26	35
16	BHORE DIPTI HARIDAS	4531	7	28	35
17	BHOSALE KIRAN BALASO	4535	7	14	21
18	BHOSALE NIKHITA RAGHUNATH	4536	10	30	40
19	BHOSALE RUTUJA TANAJI	4537	9	32	41
20	BIDKAR SAISHA VIJAY	4538	7	14	21
21	BODAKE AVISHKAR TANAJI	4539	8	28	36
22	BODKE AMIT NIVRUTTIRAO	4540	8	26	34
23	CHOUKIKAR VAISHNAVI SANJAY	4543	10	21	31
24	BUNE ANIKET KRUSHNATH	4543	7	14	21
25	CHAVAN PRATIK DHANAJI	4547	7	15	22
26	DEVKAT ROHAN RAMCHANDRA	4551	8	14	22
27	CHOUGULE ASHITOSH NANDKUMAR	4554	9	29	38

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR 416003

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI OPT - II

SUBJECT CODE : DSC-1016B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
28	CHOUGULE SANDIP VILAS	4555	7	27	34
29	DADAGOL AARATI BALESH	4560	7	14	21
30	DALAVI DHIRAJ MARUTI	4561	9	27	36
31	DALE ANIKET RAJESH	4562	7	22	29
32	DANGE SIDDHESH ANIL	4564	7	28	35
33	GAVALI VAIBHAV RAJARAM	4571	7	14	21
34	GABHALE PRAVIN PRAKASH	4578	7	14	21
35	GAIKWAD VARSHA JAYAVANT	4581	9	30	39
36	GAVALI SAGAR VISHAL	4586	7	14	21
37	GAVALI SWAPNIL RAMCHANDRA	4587	8	28	36
38	GAVANDI AASMA JAHANGIR	4588	9	18	27
39	GAVASE SWAPNIL SAMBHAJI	4589	8	24	32
40	GHATAGE SHRUTI ANIL	4593	8	36	44
41	GIRIGOSAVI SWAPNIL PANDURANG	4595	10	36	46
42	GURAV GANPATI KRUSHNAT	4596	10	31	41
43	GURAV PRAJAKTA MADHUKAR	4597	9	29	35
[redacted]					
45	HAWAL HEMANT RAJU	4604	9	27	36
46	HULSWAR PRATHMESH SUBHASH	4606	9	25	34
47	INGALE PIYUSH MOHAN	4607	9	30	39
48	JADHAV PRATHAMESH RAJAN	4609	10	24	34
49	JADHAV SUNNY ARVIND	4613	10	18	28
50	KADAM ADITYA SHIVAJI	4615	? 7	14	21
51	JAMADAR AMAN ASLAM	4617	10	21	31
52	JAMADAR NAMIRA SALIM	4618	8	28	36
53	JAMBHALE ROHIT DATTATRAY	4619	8	34	42
54	JOSHI PUJA SANTOSH	4622	7	32	39
55	KADAM LAXMAN DILIP	4624	7	21	28
56	KALAKE GAURAV NATHAJI	4626	7	14	21
[redacted]					

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI OPT - II SUBJECT CODE : DSC-1016B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
58	KALE ANAGHA VIKAS	4627	10	23	43
59	KAMBLE ADARSH ASHOK	4629	7	18	25
60	KAMBLE AISHWARYA BABRAO	4630	9	23	32
61	KAMBLE AKASH RAJU	4631	9	22	31
62	KAMBLE AMRUTA BABASAHEB	4632	9	29	38
63	KAMBLE NAVIN SARDAR	4636	10	27	37
64	KAMBLE PRATIKSHA SUNIL	4639	9	29	38
65	KAMBLE SHITAL RAJARAM	4645	8	28	36
66	KAMBLE VIJAY MAHENDRA	4650	10	25	35
67	KAMBLE YASHPAL RAJAN	4652	10	28	38
68	KANDAR SHRUTI GOVIND	4653	10	28	38
69	KASHID PRATIKSHA SATISH	4656	7	14	21
70	KAVTHEKAR SHILPA BABURAO	4661	10	33	43
71	KEVAT NILESH KAMLESH	4663	7	24	31
72	KHAN ALFIYA ALNASIR	4664	8	23	31
73	KHANDEKAR APURVA SARJERAO	4665	10	29	39
74	KHOT AJAY EKNATH	4670	8	29	37
75	KHOT ANIKET SARDAR	4671	8	20	28
76	KHOT GANESH SANJAY	4672	8	18	26
[redacted]					
78	KOLI ASHWINI JAYAVANT	4674	9	27	36
79	KHOT SURESH DNYANDEV	4675	7	14	21
80	KHUDE SHIVDATT MAHADEV	4676	8	29	37
81	KOLI ANIKET MANIK	4679	7	14	21
82	KOLI OMKAR VIJAY	4681	9	26	35
83	KOLKAR AMAR RAMESH	4686	7	14	21
84	KUSALE ABHISHEK SUDHIRKUMAR	4691	9	31	40
85	KUSALE VISHAL SHIVAJI	4692	7	14	21
86	LADE RADHIKA MOHAN	4693	8	30	38
87	LADE RAJ GHANSHYAM	4694	9	29	38

Kamble kshitij Surajj 4629 7

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI OPT - II

SUBJECT CODE : DSC-1016B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
88	LAVALE SANDIP SHIVSHANKAR	4695	7	14	21
89	LOHAR OMKAR DASHARATH	4697	7	17	24
90	LOHAR SWAPNIL SUBHASH	4699	7	14	21
91	LOKHANDE NANDPREM AJIT	4703	7	17	24
92	MAHABRI IJAJAHAMAD HASIM	4708	7	27	34
93	MALI ONKAR ASHOK	4710	9	28	37
94	MALI ROHIT LAXMAN	4711	7	24	31
95	MALI RUTUJA ARVIND	4712	9	26	35
96	MANE KETAN ANAND	4714	9	24	33
97	MANE PRATIK LAKAPPA	4716	10	31	41
98	MANE ROHIT NANDAKUMAR	4717	7	26	33
99	MANE VIKAS UTTAM	4719	7	14	21
100	MITAKE RUSHIKESH NIVAS	4725	7	14	21
101	NALAVADE SWARUPA KRUSHNAT	4729	7	14	21
102	MORE ROHAN SANJAY	4730	10	28	38
103	MORE VARSHA PANDURANG	4731	10	30	40
104	MOTE AVINASH KRUSHNAT	4732	9	27	36
105	MUJAWAR AADIL ASLAM	4733	7	21	28
106	MUJAWAR MUSKAN SHABBIR	4734	8	31	39
107	MULLANI GAVAS RAJMAHAMAD	4735	7	30	37
108	NAGARAJI RIYAJ DASTGIR	4736	8	27	34
109	NAGSEN ROHINI JAYPAL	4737	7	24	31
110	NAIK PRUTHVIRAJ MANOJ	4739	10	26	36
111	NAWALE PRASHANT SUBHASH	4744	9	26	35
112	NIGADE HEMANT BABAN	4745	7	19	26
113	NIKAM VAISHNAVI VITTHAL	4746	8	30	38
114	PADAVAL ANKITA SANJAY	4747	9	31	40
115	PANDHARE RUSHIKESH RAVINDRA	4751	7	18	25
116	PATIL ANIKET SATISH	4756	7	22	29
117	PATIL ANKITA SANDESH	4757	7	27	34

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI OPT - II

SUBJECT CODE : DSC-1016B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
118	PATIL ARPITA AMAR	4759	7	14	21
119	PATIL MANDAR MOHAN	4763	7	20	27
120	PATIL KIRAN SARJERAO	4765	7	26	33
121	PATIL NIKITA PRASHANT	4766	7	28	35
122	PATIL PRATIKSHA SHIVAJI	4771	7	27	34
123	PATIL ROHIT VIKAS	4774	7	29	36
124	PATIL SARTHAK MARUTI	4776	8	16	24
125	PATIL SNEHAL SAMBHAJI	4781	7	24	31
126	PATIL YUVRAJ DHANAJI	4782	7	18	25
127	PATLE MAHESH RAJENDRA	4783	7	28	35
128	PAWAR SOURABH RAMESH	4788	7	14	21
129	PAWAR SOURABH SANJAY	4789	9	22	31
130	PAWAR SUMIT SANJAY	4790	9	32	41
131	POWALKAR PRANALI TANAJI	4791	7	27	34
132	POWAR ARCHANA RAJENDRA	4794	8	27	35
133	POWAR PRATHAMESH SANJAY	4795	9	23	32
134	RAJPUT SUMIT SURATSING	4801	7	25	32
135	RUIKAR MANSI BHUPAL	4802	9	25	34
136	RUKADIKAR NIHAL ALNISAR	4803	10	21	31
137	SABALE NIKHIL NARAYAN	4804	8	33	41
138	SAKATE ANIKET SHANKAR	4805	7	24	31
139	SALAGAR SNEHA MARUTI	4806	10	20	30
140	SALGAR PAVAN SAMBHAJI	4808	7	14	21
141	SALOKHE ROHIT KRISHNA	4809	7	14	21
142	SALOKHE SHUBHAM BHARAT	4810	10	33	43
143	SANADE AAFROJ JAVED	4811	9	30	39
144	SANGALE KEDAR RAMESH	4813	7	23	30
145	SANGAR SARVESH SUBHASH	4814	8	29	37
146	RENUSHE AKSHAY PATANGRAO	4815	7	21	28
147	SASANE KIRAN LAXMAN	4816	7	24	31

ESTD JUNE 1964

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI OPT - II SUBJECT CODE : DSC-1016B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
148	SASWADE RAJANI RAJENDRA	4819	7	25	32
149	SATHE OMKAR DATTATRAY	4821	7	14	21
150	SAWANT PRANAV KISHOR	4823	10	25	35
151	SHAIKH SAAD MUSTAKMAHAMAD	4828	10	32	42
152	SHAIKH WAJID TAJMAHAMAD	4829	9	18	27
153	SHIKALGAR YASIN HASAN	4832	7	17	24
154	SHINDE KARAN SHIVAJI	4835	7	27	34
155	SHINGE CHETAN RAMESH	4838	9	25	34
156	ZENDE SIDHARTH SUKHADEV	4840	7	26	33
157	SUDAKE RAKESH KAKASAHEB	4843	7	14	21
158	SUTAR AARATI RANGRAV	4847	9	18	27
159	SUTAR POOJA RANGRAV	4848	7	14	21
160	SUTAR PALLAVI BHAGVAN	4850	10	20	30
[redacted]					
162	SUTAR PRIYANKA NARAYAN	4851	9	18	27
163	SUTAR SANKET KRUSHNAT	4852	7	16	23
164	SUTAR SUMIT ASHOK	4853	7	14	21
165	SONULE KOMAL SHANTINATH	4854	7	14	21
166	SUTAR TANAYA RAMCHANDRA	4855	10	20	30
167	TIPUGADE OMKAR ASHOK	4858	7	14	21
168	VADAR AMOL DILIP	4860	7	16	23
169	VADAR SACHIN PRAKASH	4861	7	14	21
170	VADDR PRIYANKA SARJERAV	4863	8	16	24
171	VALVEKAR PAVAN GAJANAN	4865	9	18	27
172	VAROSE POONAM KISAN	4866	7	14	21
173	VENGEEPURAM SHREEDEVI SHARVANI RAGHUSYAM	4867	7	14	21
174	WAGHMARE ROHAN RAMCHANDERA	4869	10	20	30
175	YADAV ANIKET ASHOK	4872	7	14	21
176	YADAV ANIKET MUKUND	4873	7	14	21
177	YADAV PRAMOD SANJAY	4874	7	14	21

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI OPT - II SUBJECT CODE : DSC-1016B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
178	YADAV RADHAKUMARI DINESH	4875	7	14	21
179	SHELAR SHUBHAM PINTU	4889	7	14	21
180	PATOLE AVADHUT HEMANTKUMAR	4891	7	14	21
181	JATHAR MAHESH JANARDAN	4892	? 7	✓ 14	21 A
182	SUTAR PRATIK LAXMAN	4893	7	19	26
183	KAMBLE SOURABH ANIL	4894	7	19	26
184	CHAVAN GANESH BHIKAJI	4908	10	28	38
185	PATIL VIJAYA VITHAL	4909	7	14	21
186	POWAR ARUNA APPASO	4910	7	14	21

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of Head of Department

Dr. A. S. Mahal

Yadav Aakash Narayan. 4879 7 -

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

Vijay Mahendra Kamble
Roll No :- 4650

5/5

Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

B.A. Part- I (Semester-II) Exam.: March/April 2020

Hindi (DSC) Subject Code : 1016 B, Internal Test

ऐच्छिक प्रश्नपत्र - छायावादोत्तर हिंदी कविता और रचनात्मक लेखन

Day& Date : 28/02/2020 Time :

सूचनाएँ : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। हर सवाल आधे अंक के लिए रहेगा। Total Marks : 05

प्रश्न १) निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) नागार्जुन मार्क्सवाद विचारधारा के प्रमुख कवि है।

क) मार्क्सवाद ख) जनवादी ग) प्रगतिवादी घ) प्रयोगवादी

2) 'साँप! तुम सभ्य तो हुए नहीं'

क) सभ्य ख) असभ्य ग) अच्छे घ) बुरे

3) यह जो तिलक माँगता है, लड़के की धौंस जमाता है
कम देहज पाकर लड़की का जीवन नरक बनाता है।

क) नरक ख) स्वर्ग ग) दर्दनाक घ) आनंदी

4) 'माँ ने हर चीज के छिलके उतारे मेरे लिए।'

~~क) छिलके~~ ख) मुखौटे ग) आवरण घ) बीज

5) 'मैं बरई हूँ, बरई - हूँ।'

क) बरई ख) बहेली ग) बैरागी घ) चोर

6) 'बीस साल बाद' कविता ----- कविता संग्रह से ली गई है। संसद से सड़क तक

क) संसद से सड़क तक ख) कल सुनना मुझे ग) सुदामा पांडे का प्रजातंत्र घ) बीस साल बाद

7) मैंने कहा चम्पा पढ़ लेना अच्छा है।

क) पढ़ ख) लिख ग) शिक्षा घ) काम

8) दुष्यंत कुमार के नाम पर ----- सम्मान प्रारंभ किया गया है। दुष्यंत कुमार

क) दुष्यंत कुमार ख) साहित्य अकादमी ग) ज्ञानपीठ घ) व्यास

9) 'है गीत बेचना वैसे बिलकुल पाप/क्या करूँ मगर लाचार हार-कर/गीत बेचता हूँ।'

क) घबरा ख) जीत ग) हार घ) डर

10) 'सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।'

क) बवाल ख) हंगामा ग) विवाद घ) झगड़ा

*****

Scanned by CamScanner

VIVEKANAND COLLEGE

Scanned by CamScanner

और मेरी शादी करते समय यह ध्यान में रखना की जिस गाँव में जिस घर में आदमी को कम किमत हो और आदमी के बदले ईश्वर को ज्यादा किमत मिलती हैं। और आदमी के बदले उपर ध्यान कम दिया जाए। इस घर में मेरा बिहा मत करना। यह बेटी अपने बाबा को कह रही हैं। और भी वह केहते हैं की मेरा ब्याहा उसी गाँव में करना उस गाँव में नंदी जंगल और पहाड़ जैसी सुंदरता हर दिशा में फैली हो। वो अपने बाबा से केहती हैं की जिस जगह पर तेज दौडती हो मोटर गाडियाँ और उचे-उचे मकान, दुकाने बडी-बडी हो ऐसी जगह मेरी शादी मत करना यह लडकी अपने पिता से केहती हैं।

लडकी अपने बाबा से ससुराल का घर कैसा चाहिए उसका वर्णन करते हुए कहती हैं की मेरा रिश्ता जिस घर में तय करो घर में मुर्गे हो और घर के सामने बडा सा आंगन हो और मास खाने में अक्सर डुना जाता हो। उस घर में मेरी शादी मत करना। गाँव के मेले से जो निकम्मे लडकोयाँ उठाकर दुसरों को बेचते हैं। ऐसे दलाल के साथ मेरा ब्याहा मत करना। मेरी शादी सोच समझकर ही करना। क्योंकी एक बार जो मेरी शादी हो गई, तो उसकी बुरी आदते उसका निकम्मा पण समझ में आकर भी उसका कुछ उपयोग नहीं। होगा क्योंकी एक बार जो शादी हो गई उसे बदला नहीं जाता इसलिए वर ऐसा चुनना जो मेरी देखभाल रख सके।

जो वर बात-बात में शुल्क कारण में उसके साथ लाटी डंडे, और तीर धनुष कुल्हाडी लेकर झगडा करता हो जो समझदारी से काम ना करता हो ऐसा वर मुझे नहीं चाहिए। और जो घर में न बताकर कहीं भी घुडने जाता हैं। घर के लोगो के बारे में न सोचता हो ऐसा वर मुझे नहीं चाहिए। इसके के भी साथ जिसने कभी भी पेड नहीं लगाया हो और उसके हाथों ने कभी भी दुसरों की जिम्मेदारी नहीं उठाई हो ऐसे लडके के साथ मेरी शादी कभी मत करना।

Scanned by CamScanner

जो लड़का कभी स्कुल में नहीं गया हो जिसने कभी शिक्षा को नहीं समझा उसके हात में मेरा हात मत देना। मेरी शादी करनी हो तो उस जगहपर करना जिस में तुम मुझे दुःख में रोते सुनकर भागकर आ सको और हम पैदल घर आ सके जब मैं आनंद में रहुंगी तब मैं तुम्हारे लिए खजुर का गुड़ बनाकर रखेंखसा, कद्दु र. तुम्हारे लिए किसी अपने गाँव वालों के हाथ से भेज सकु।

लड़की अपने बाबा से विनती करती है की मेरा ब्याहा उस गाँव में करना जिस गाँव के बाजार में जाते समय हमारे गाँव का कोई रास्ते में मिले उससे मैं घर के बारें में पुछ सकु। उस गाँव में ही करना मेरा ब्याहा। जिस गाँव में देश के ईश्वर को कम और आदमी को जादा मानते हो। उसके साथ जात-धर्म का भेद-भाव न करते हुए सारे लोग सुख-दुख में एकसाथ रहे।

बांसुरी बजाने वाले जैसे भावनाओं से जुडे रहते है, वैसे ही भावनाशिल पती मेरे लिए चुनना। वसंत के ऋतु में आने वाले खातिर पलाश के फुल मेरा जुडो के लिए रोज लाता हो मेरे उपवार में भुखी रहु तब उसे भी खाया नहीं जाता हो ऐसा वर मुझे चाहिए।

इस तरहा लड़की अपने पिताजी से लड़का कैसा होना चाहिए। इसके साथ ही उसका घर गाँव और उसका चरित्र कैसा होना चाहिए यह बताते हुए। इस तरह ब्याहा पर मत करना कह रही हैं।

5/5

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

ASSESSMENT SHEET-MARCH-APRIL 2020

Office Copy

PROGRAMME B.A.SEM-II EXAMINATION: SEE

SUBJECT : HINDI COMP SUBJECT CODE : GEC-10128

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
1	AATIPAMUL RAJESH AMBADAS	4501	7	14	21
2	ADSUL UTKARASHA SANJAY	4503	7	31	38
3	ASWALE AKASH TANAJI	4510	7	24	31
4	ATIGRE KARAN PRAKASH	4511	7	17	24
5	BAGADI ASHA KUNDLIK	4514	7	14	21
6	BAMANE GAURI ANANDA	4516	10	26	36
7	BAMNE SNEHA SUNIL	4517	9	25	34
8	BHOSALE BHARAT DILIP	4518	8	16	24
9	CHAVAN SAMRUDHI NANDAKUMAR	4534	7	22	29
10	BHOSALE AASHLESHA SHIVRAJ	4534	7	14	21
11	BODKE AMIT NIVRUTTIRAO	4540	7	28	35
12	CHOUGULE ROHIT GULABRAO	4542	7	19	26
13	CHAVAN DHANANJAY GURUNATH	4544	7	25	32
14	CHAVAN MURALI RAJENDRA	4546	7	17	24
15	CHAVAN PUSHPAK SANJAY	4549	10	30	40
16	CHAVAN SWATI AJIT	4550	9	20	29
17	CHOUGALE DHANASHRI MADHUKAR	4553	7	14	21
18	DABHOLKAR PRATIK VIJAY	4558	10	30	40
19	DAVARI VAISHNAVI SAMBHAJI	4566	9	14	23
20	DHAKAVE VISHAL BAPUSO	4568	10	14	24
21	DHANAWADE SHRUTI SANDIP	4569	10	20	30
22	FADATARE ARATI VISHNU	4575	9	16	25
23	GHASTE SONAM SHIVAJI	4591	9	30	39
24	GHATAGE DHANASHREE BALASO	4592	7	24	31
25	GURAV SIDDHARTH TANAJI	4599	7	20	27
26	HALLALE GANESH MOTIRAM	4602	7	14	21
27	HARUGADE SACHIN DEEPAK	4603	7	20	27

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI COMP

SUBJECT CODE : GEC-1012B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)
28	HONMANE TUSHAR TUKARAM	4605	7	20	27
29	JAGDALE OMKAR VIKAS	4615	7	28	35
30	KACHARE ROHIT SANTOSH	4623	7	21	28
31	KAMBLE OMKAR SHANKAR	4637	7	20	27
32	KAMBLE RUTVIK TANAJI	4642	7	16	23
33	KAMBLE VAIBHAV RAJENDRA	4649	7	20	27
34	KASHID ANKITA MAHADEV	4655	8	35	43
35	KATHARE SNEHA PRABHUDDHA	4659	8	32	40
36	KATKAR VISHKHA DILIP	4660	7	33	40
37	KAVTHEKAR SHILPA BABURAO	4661	7	35	42
38	KOLI RUPALI HAMBIRRAO	4682	8	23	31
39	KUPWADE TEJAS DEEPAK	4689	8	29	37
40	MAGDUM PRAJAKTA DIGAMBAR	4706	8	31	39
41	MAGDUM RAJKANYA JALINDAR	4707	9	34	43
42	MAHABRI IJAJAHAMAD HASIM	4708	7	25	32
43	MALAVI AKASH YUVRAJ	4709	7	14	21
44	MANE ANURAJ YUVRAJ	4713	7	29	36
45	MANE OMKAR DNYANESHWAR	4715	9	25	34
46	MANG AKASH KUNDLIK	4720	9	33	42
47	MITAKE JEEVAN BRAMHADEV	4724	7	21	28
48	MORE AVANTIKA SANJAY	4728	8	34	42
49	NALAWADE RUTUJA TANAJI	4742	7	24	31
50	PATIL ADINATH MOHAN	4754	7	14	21
51	PATIL BHIKUTAI RAJARAM	4762	7	28	35
52	PATIL PRANAV ANANDA	4770	7	22	29
53	PATIL PRIYANKA ASHOK	4772	9	36	45
54	PATIL ROHIT MADHUKAR	4773	8	20	28
55	PATIL SANJEEVANI JOTIRAM	4777	9	31	40
56	PATOLE RUTUJA BABURAO	4784	9	35	44
57	POWAR AKANKASHA KRUSHNAT	4792	9	21	30

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416003

Scanned by CamScanner

SUBJECT : HINDI COMP SUBJECT CODE : GEC-1012B

SR NO	STUDENT'S NAME	Roll No	SEM-2 CIE (10)	SEM-2 CA (40)	TOTAL (50)	
58	POWAR ARATI RAJENDRA	4793	9	37	46	
59	PUJARI SHUBHAM SUBHASH	4799	7	14	21	
60	SANKPAL DHAIRYASHIL RANJIT	4815	7	17	24	
61	SATARDEKAR ADITYA SAJJAN	4820	7	22	29	
62	**SATHE OMKAR DATTATRAY**	**4821**	**7**	**14**	**21**	
63	SAWANT RAVIRAJ RAMRAO	4824	7	26	33	
64	SARNAIK SHIVANAND KALLAPPA	4825	7	18	25	
65	SHINDE ANUJA ASHOK	4833	8	28	36	
66	SHINDE TUSHAR NAMDEV	4837	7	33	40	
67	**SURYAWANSHI PRAVAN PRALHAD**	**4845**	7	14	21	*
68	SURYAWANSHI PRIYANKA SHIVAJI	4846	10	20	30	
69	SUTAR AARATI RANGRAV	4847	8	16	24	
70	**SUTAR POOJA RANGRAV**	**4848**	**7**	**14**	**21**	
71	SUTAR ANITA SAMBHAJI	4849	8	24	32	
72	**SONULE KOMAL SHANTINATH**	**4854**	**7**	**14**	**21**	*
73	SUTAR TANAYA RAMCHANDRA	4855	10	20	30	
74	**TONAPE MANGESH MARUTI**	**4859**	**7**	**14**	**21**	
75	**VENGEEPURAM SHREEDEVI SHARVANI RAGHUSYAM**	**4867**	**7**	**14**	**21**	
76	**WAYDANDE UDAY KUNDLIK**	**4871**	**7**	**14**	**21**	
77	**YADAV RADHAKUMARI DINESH**	**4875**	**7**	**14**	**21**	
78	**ZAWARE AYUSH UMESH**	**4876**	**7**	**14**	**21**	
79	**THAKARE ANIKET SAMBHAJI**	**4879**	**7**	**14**	**21**	
80	**KAKADE AWDHUT CHANDAN**	**4911**	**7**	**14**	**21**	

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of Head of Department

Dr. A.S. Mahat

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

NaMe- Avantika Sanjay More.

4/5

Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

B.A. Part- I (Semester-II) Exam.: March/April 2020

Hindi (GEC) Subject Code : 1012 B, Internal Test

Roll No. 4728

अनिवार्य प्रश्नपत्र B - संपादन कला एवं हिंदी कहानी

~~Roll No-4428~~

Day& Date : 26/02/2020 Time :

सूचनाएँ : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। हर सवाल आधे अंक के लिए रहेगा। Total Marks : 05

प्रश्न १) निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य के व्यंग्य कारों में हरिशंकर परसाई का नाम अग्रगण्य है।

क) व्यंग्य ख) उपन्यास ग) कहानी घ) निबंध

2) 'मैं नारद हूँ। तुम्हें लेने आया हूँ। चलो स्वर्ग में तुम्हारा इंतजार हो रहा है।'

क) स्वर्ग ख) घर ग) नरक घ) कार्यालय

3) मलबा ध्वस्त मानवीय मूल्यों का प्रतीक है।

क) मानवीय ख) परिवारिक ग) सामाजिक घ) राष्ट्रीय

4) शानी का वास्तविक नाम गुलशेर खाँ शानी है।

क) गुलशेर खाँ शानी ख) अब्दुल खाँ शानी ग) गुलबेन खाँ खानी घ) हामिदअली खाँ शानी

5) 'मैं बरई हूँ, बरई हूँ।'

क) बरई ख) बहेली ग) बैरागी घ) चोर

6) नयना डॉ. नरेंद्र से प्रेम किया था।

क) मुमताज ख) डॉ. नरेंद्र ग) रविभूषण घ) शिवनाथबाबू

7) मैं रामस्वारथ प्रसाद... एक्स स्कूल हेडमास्टर.

क) हेडमास्टर... ख) अध्यापक ग) प्रधानाचार्य घ) अधिव्याख्याता

8) अमरकांत को डिप्टी कलेक्टरी कहानी के कारण कहानीकार के रूप में ख्याति मिली।

क) जिंदगी और जोंक ख) डिप्टी कलेक्टरी ग) देश के लोग घ) मौत का नगर

9) 'दूसरा ताजमहल' रिश्तों की त्रासदी को बयान करती है।

क) अकेलेपन ख) रिश्तों ग) परिवार घ) समाज

10) 'तिरिछ' कहानी समाज का विकृत चेहरा है।

क) विकृत ख) यथार्थ ग) वास्तविक घ) आदर्श

*****

Scanned by CamScanner

" ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार "
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Signature of Supervisor

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE (Autonomous), KOLHAPUR

Class B.A.I Div ______ Roll No. 4728

Suppliment No. ______ Subject हिंदी

~~Test / Tutorial No.~~

Name- Avantika Sanjay More

प्र ७) तिरिछ कहानी की कथावस्तु लिखिए।

'तिरिछ' अपने आप में एक बेजोड़ कहानी है। इसी कहानी के शीर्षक से संग्रह का शीर्षक रखा है। यह उदय प्रकाश की कहानी अपने संश्लिष्ट विन्यास में नए दौर की अधिकांश विशेषताओं को समेटे हुए है। यह एक अत्यंत चर्चित कहानी है। इसमें एक पिता के साथ गुजरे घटना-क्रम का अंकन है। पिता एक अत्यंत संवेदनशील व्यक्ती है। वे स्कूल के रिटायर्ड प्रधानाचार्य और वर्तमान ग्राम प्रधान है। एक दिन पिता को तिरिछ काट लेता है। तिरिछ यह एक अत्यंत जहरीला प्राणी है। कहते हैं तिरिछ के कटाने के पर आदमी बच नहीं सकता। लेकिन ऐसा भी मानना है कि अगर तिरिछ के काटने के बाद उसके पेशाब करके उसमें लोटने से पहले खुद किसी नदी, कुएँ या तलाब में डुबकी लगा ली या फिर तिरिछ के ऐसा करने से पहले उसे मार दिया तो आदमी बच सकता है। पिताजी ने तिरिछ के ऐसा करने से मार दिया था। पिता को दुसरे दिन अदालत में पेशी के लिए शहर जाना पड़ता है। रास्ते में ट्रॅक्टर से जाते समय उनके तिरिछ के काटने की बात निकलती है इस पर गाव के एक पंडित राम औतार कहते है कि तिरिछ का जहर कभी-कभी काटने के चौबीस घंटे के बाद भी अपना असर दिखाता है। इसलिए वे सुझाते हैं कि चरक का निचोड़ सुत्र यह है की विष ही विष की औषधी होता है। पिता को अगले

Scanned by CamScanner

गाँव में एक तेली के खेत में धतुरे के पौधे को खोजकर उसके बीजों को पीसकर उसका काढ़ा बनाकर पिला दिया जाता है।

जहरीला काढ़ा पीने के लगभग दो घंटे के बाद पिता को शहर में सरे चौराहे ट्रैक्टर में उतारकर उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है, हालांकि तब तक वे सिर घुमने और गला सूखने की शिकायत कर चुके थे। वे थोड़ा परेशान भी थे क्योंकि अदालत जाने का रास्ता उन्हें मालूम नहीं था। पर उनके गाँव के लोग उनकी उस हालत का कोई विचार न करते हुए उन्हें एक चौराहे पर छोड़ देते हैं। पिता आत्मसम्मान वाले थे और कुछ अतिरिक्त गंभीर भी। डॉ पंत से अपने बेटे की फीस के लिए मदद मांगने का फैसला करने में उन्हें दो दिन लग गए थे।

ट्रैक्टर से उतरने पर पिता को धतुरे के काढ़े का असर शुरू होता है। प्यास लगने पर भी वे संकोच के कारण होटल वाले से पानी नहीं माँगते। रास्ता मालूम न होने पर भी किसी से नहीं पूछते। शहर में पिता को अंत तक कई यातनाभरी घटनाओं से गुजरना पड़ता है। घुमते-घुमते वे एक बैंक के सामने आते हैं। उनके गाँव का रमेश दत्त नामक व्यक्ति भूमि विकास सहकारी बैंक में क्लर्क है। पिता के दिमाग में सिर्फ बैंक रहा हो। वे स्टेट बैंक में घुसते हैं और कैशियर के टेबल तक पहुँचते हैं। कैशियर उन्हें देखकर चौंक जाता है क्योंकि उनका हुलिया अत्यंत बिगड़ा हुआ होता है। धूल के कारण उनके शरीर से बु आ रही होती है, उनके चेहरे पर धूल जमा हुई होती है। बैंक में उन्हें चोर समझकर चपरासियों द्वारा मार-पिटा जाता है। उनके पास रुपये और अदालत के कागज छीन लिए जाते हैं। यहाँ से पिता पुलिस स्टेशन जाते हैं वहाँ पर भी उन्हें भिखारी समझकर मार कर

Scanned by CamScanner

भगा दिया जाता है। शहर की एक संपन्न कालोनी में वे पहुंचते हैं। वहां पहुंचते - पहुंचते उनके शरीर पर सिर्फ जाँघिया ही बचा था। उस अवस्था में वे एक से पीने के लिए पानी मांगते हैं तो वहाँ यह कहकर मारा जाता है कि वे रामरतन शरीफ की बीवी और साली पर हमला करने वाले थे। धतूरे के जहर ने उनकी दिमागी हालत पुरी तरह से बिगाड़ गयी थी। उन्हें ठीक-ठीक कुछ समझ नहीं रहा था। नेशनल रेस्टोरेंट ढाबे के सामने पिता लड़कों द्वारा घिर जाता हैं। वहां पर लड़कों द्वारा पिता को ढेले मारने शुरू होता है। उनकी दाहिनी आँख फूट जाती है, निचला होंठ कट जाता है और उससे खून बहने लगता हैं। इतने में पिता के बचपन के दोस्त पंडित कुंदई राम तिवारी उसी समय नेशनल रेस्टोरेंट के सामने से गुजर रहे थें उन्होंने वहाँ जाकर देखने की कोशिश की जहां पिता को भिड़ जुटकर उनकी पिटाई कर रही थी। पुछने पर उन्हें पहचानता है। बताया गया कि कोई पाकिस्तानी जासूस पकड़ा गया है, जो पानी कि टंकी में जहर मिलाने जा रहा था। लेकिन हमेशा लेट आनेवाली बस उसी समय आ गयी और उन्हें वहां रुकने और अपने मित्र को पहचानने का मौका नहीं मिल सका। अंत में पिता के ही गाँव का एक मोची गणेशवा उन्हे पहचानता है। वह पिता के कान में कुछ आवाजे भी लगाता है, लेकिन वे कुछ बोल नहीं पाते। कुछ देर बाद अपने नाम के साथ-साथ गांव का नाम लेते हुए दुनिया से विदा हो जाते हैं।

इस प्रकार तिरिछ कहानी शहरों में खत्म होती संवेदना को उभारने वाली एक मार्मिक कहानी है। मैं शैली में लिखी इस कहानी के 'पिताजी' तिरिछ के काटने से नहीं मरते, बल्कि शहरी जीवन की संवेदनहीनता और निर्ममता के कारण मरते हैं। क्योंकि वे एक बेहद संवेदनशील और आत्मसम्मान वाले

व्यक्तियों।" यह कहानी न केवल अपने समय की तात्कालिकता का परिचय कराती है. वरन् अपने समय से बहुत आगे के भयावह और विकराल होते समय से भी हमारा परिचय कराती हैं। अपनी चतुरी रचनात्मक डिज़ाइन के साथ यह कहानी पाठक के मानस में प्रवेश कर उसके मानसिक तन्तुओं को झिंझोड़ कर रख देती है।"

4/5

Scanned by CamScanner

COMP.

(4)

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : MAR-APR 2020 **Exam Name :** CIE

Course : B.A. SEM 4 **Max Marks :** 10

Subject : HINDI PAPER-V (DSC-1016D1)

Sr. No.	Student Name	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
1	BAGWAN IRAM NISARAHMAD	5003	Locked	9
2	BARAGE KOMAL BABURAO	5008	Locked	9
3	BHOGALE DIPAK DINKAR	5011	Locked	7
4	BHOPALE SHUKRANI VASANT	5012	Locked	9
5	BHOSALE VARAD NARENDRA	5017	Locked	8
6	BODAKE GANGARAM BALU	5018	Locked	8
7	CHAVAN SUJAY SHIVAJI	5023	Locked	8
8	CHAVAN OMKAR LAHU	5024	Locked	9
9	CHOUGALE ANKITA NIVAS	5029	Locked	9
10	CHOUGALE VIJAY ANANDA	5031	Locked	9
11	DEASI DEVYANI SURYJAI	5036	Locked	9
12	DUDHALE PRASHANT SUBHASH	5044	Locked	9
13	GAIKWAD SAMIKSHA SANJAY	5049	Locked	7
14	GAVALI AISHWARYA MANSING	5052	Locked	10
15	GHATAGE SAIPRASAD MAHADEV	5059	Locked	8
16	GODAGE AMRUTA KALYAN	5063	Locked	9
17	GOLANDAJ RAISA LIYAKAT	5064	Locked	9
18	GUNDESHA KOMAL KALPESH	5067	Locked	9
19	INDIKAR KAJAL MALAPPA	5073	Locked	9
20	INGAVALE DEVESH DASHRATH	5074	Locked	9
21	INGAWALE VIKRANT RAMDAS	5075	Locked	7
22	JADHAV MADHAVI BALASO	5078	Locked	9
23	JADHAV PALLAVI BALASO	5079	Locked	9
24	JATHAR KAJAL ANANDA	5084	Locked	9
25	JIRAGE SHAILESH SURESH	5085	Locked	9
26	KAMAT ROHAN MAHAVEER	5091	Locked	9
27	KAMBLE CHETAN SANJAY	5095	Locked	9
28	KAMBLE LAXMAN MAHADEV	5099	Locked	8
29	KAMBLE MANASI AKARAM	5100	Locked	10
30	KAMBLE NEHA RAMESH	5101	Locked	10
31	KAMBLE PALLAVI YASHWANT	5102	Locked	10

Tupe

Name & Signature of Internal Examiner

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : MAR-APR 2020 **Exam Name :** CIE

Course : B.A. SEM 4 **Max Marks :** 10

Subject : HINDI PAPER-V (DSC-1016D1)

Sr.No.	Student Name	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
32	KAMBLE ROHIT MADHUKAR	5106	Locked	9
33	KAMBLE SALONI SARJERAO	5108	Locked	7
34	KAMBLE SHIVANI DILIP	5112	Locked	8
35	KAMBLE SUMEDH VISHWAS	5114	Locked	9
36	KAMBLE SWAPNIL RAJARAM	5115	Locked	9
37	KAMBLE VAIBHAV MAHADEV	5116	Locked	8
38	KAPADE ATUL SADANAND	5119	Locked	10
39	KARANDE KRUSHNAT SUNIL	5120	Locked	9
40	KATKAR ALKESH RAJENDRA	5122	Locked	9
41	KESARE OMKAR AKARAM	5124	Locked	9
42	KHOT PRIYANKA PRABHAKAR	5131	Locked	9
43	KOLI MURALI MAHADEV	5137	Locked	9
44	KOLKAR POOJA DURGAPPA	5140	Locked	9
45	KULKUTAKI RUSHIKESH PRATAP	5142	Locked	9
46	KUMBHAR VIDYA LAKSHMAN	5143	Locked	10
47	LANDGE ROHIT VIVEKANAND	5144	Locked	10
48	MAINA KIRTI KIRAN	5150	Locked	9
49	MALAGE RAKESH BHIMRAO	5151	Locked	8
50	MANE AISHWARYA NITIN	5152	Locked	9
51	MANE PRIYANKA RAJU	5156	Locked	9
52	MIRAJKAR KETAN NANDKISHOR	5164	Locked	7
53	MOHITE SAURABH VIJAY	5166	Locked	10
54	MULLA ASIF BABASAHEB	5171	Locked	10
55	MULLA MUMATAJ DADASO	5172	Locked	9
56	NALAVADE SWAPNIL PRAKASH	5177	Locked	8
57	NARVEKAR MAHESH MUNJUNATH	5182	Locked	9
58	NIGADE SHWETA MADAN	5185	Locked	9
59	NIKAM RUTURAJ BALASO	5186	Locked	7
60	PARIT MAYURI MURALIDHAR	5190	Locked	9
61	PATIL ANIL TATOBA	5198	Locked	8
62	PATIL AVINASH BAJIRAO	5201	Locked	10

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1934 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

COMP.

MARK ENTRY REPORT

Session : MAR-APR 2020 **Exam Name :** CIE

Course : B.A. SEM 4 **Max Marks :** 10

Subject : HINDI PAPER-V (DSC-1016D1)

Sr.No.	Student Name	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
63	PATIL DHANASHREE BALASAHEB	5202	Locked	8
64	PATIL OMKAR MAHADEV	5206	Locked	7
65	PATIL ROHIT VISHWAS	5214	Locked	9
66	PATIL SUSHANT SHIVAJI	5225	Locked	9
67	PATIL VELINDA SATISH	5228	Locked	8
68	PATIL VISHAKHA DATTATRAY	5229	Locked	10
69	PATIL VISHVAJEET VISHNU	5230	Locked	7
70	PHADTARE RUSHIKESH SHIVAJI	5236	Locked	10
71	POWAR SANDHYA SARDAR	5245	Locked	10
72	PUJARI ANIL YALLAPPA	5248	Locked	8
73	RANSING KARAN JITENDRA	5255	Locked	7
74	REDEKAR RUTIKA VASANT	5256	Locked	8
75	RUKADIKAR YASH AJIT	5258	Locked	9
76	SANGALE AKSHAY SHIVAJI	5261	Locked	8
77	SATPUTE GIRISH DADU	5264	Locked	9
78	SAWANT ANUSHKA SITARAM	5269	Locked	10
79	SHINDE AISHWARYA SANDEEP	5279	Locked	10
80	SHINDE TEJAS SAMBHAJI	5284	Locked	9
81	SHITOLE TEJASWINI SOPAN	5285	Locked	7
82	SURYAWANSHI SURAJ SANJAY	5288	Locked	10
83	TIRUKE SURAJ RAMESH	5293	Locked	9
84	Harish kundlik kotkar	5142		10

Name & Signature of Internal Examiner

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

कु. किर्ती किरण मैना
Roll No-: 5150

Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

B.A. Part- II (Semester-II), Exam.: March/April 2020

Hindi (GEC) Subject Code : DSC-1016 D2, Internal Test

ऐच्छिक प्रश्नपत्र - हिंदी नाटक एवं एकांकी

4/5

Day & Date : Time :

सूचनाएँ : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। हर सवाल आधे अंक के लिए रहेगा। Total Marks : 05

प्रश्न १) निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) हबीब तनवीर का जन्म रायपुर में है।

(क) रायपुर ख) भोपाल ग) दिल्ली घ) इनमें से कोई नहीं

2) हबीब तनवीर की मृत्यु सन् 2009 में हुई।

(क) 2009 ख) 1923 ग) 1975 घ) 1982

3) हबीब तनवीर हिंदुस्तानी रंगमंच के निर्देशक पुरुष थे।

क) शलाका ख) अभिनेता (ग) निर्देशक घ) कवि

4) मदनमोहन का बॉक्स नंबर 311 था।

(क) 311 ख) 3111 ग) 31111 घ) 3001

5) भारत सरकार ने चिरंजीत को पद्मश्री उपाधि से गौरन्वित किया।

(क) पद्मश्री ख) भारतरत्न ग) पद्मभूषण घ) भाषा सम्मान

6) एकांकीकार चिरंजीत ख्यातिप्राप्त रेडियो नाटककार है।

(क) रेडियो ख) नुक्कड़ ग) मंचीय घ) इनमें से कोई नहीं

7) सफदर हाशमी का जन्म कानपुर में हुआ।

क) दिल्ली ख) गाजियाबाद (ग) कानपुर घ) आग्रा

8) हल्लाबोल कौनसा नाटक खेलते समय सफदर हाशमी की हत्या हुई।

क) मर्शान (ख) हल्लाबोल ग) अपहरण भाईचारे का घ) राजा का बाजा

9) 'हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है।'

क) विद्रोह (ख) संघर्ष ग) आंदोलन घ) मोर्चा

10) 'हल्लाबोल' नाटक मिल मजदूर की यथार्थ जिंदगी का चित्रण करता है।

(क) मिल मजदूर ख) गरीबों ग) ठेकेदारों घ) पुलिस

*****

Scanned by CamScanner

Signature of Supervisor

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's
VIVEKANAND COLLEGE (Autonomous), KOLHAPUR

Class B.A. II Div - 5 Roll No. 5150

Suppliment No. Home Assignment Subject Hindi

Test / Tutorial Name Kirti Kiran Maina

प्र।. चरनदास चोर कहानीकी कथा वस्तू लिखिए

→ चरणदास चोर जिन वास्तविक भारतीय ग्रामीण संस्कृती की गुणात्तओं की अनुभूति करता है। उससे सौम्यता हास्य कलात्मक लय के साथ अंदर तक पैठ हुए धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा है। समाज मे व्याप्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा के कारण विविध कठिनायोंसे लडकर स्वय को जीवित रखने में सक्षम रखती है। भारतीय ग्राम जीवन के परंपरागत पात्रों का चित्रण बखूबी हुआ है। नाटक लोक कथा से ली गई है। जिसमे संगित, नृत्य का सुंदर समन्वय की कथा है। संगीत गीत और नृत्य के साथ सुसज्जित किया गया है जिसमें चक्कर के साथ तेज गति मे घुमने के साथ पुरुष पात्रों द्वारा तेज कदमो से जुडी हरकत से शाप देकर किये जाने वाला नृत्य भी है।

एक गुरु जो शिष्य को बनाने से पहले अपनी बुरी आदत छोड देने के लिए कहता है। चरणदास उसका शिष्य बनने उसके पास एक दिन पहूँच जाता है। यह देखकर की चरनदास चोर है। गुरु उसे चोरी छोडने का प्रण करने के लिए कहता है, लेकिन चोर कहता है की झूठ और चोरी का गहरा रिश्ता है. अगर वह झूठ नही बोलता तो चोरी नही कर सकेगा। गुरु उसे शिष्य बनाने से इंकार कर देता है। आखिर चरणदासने उनकी बात मान लेता है। लेकिन चरणदास एक बनाव चार प्रण लेता है - कि

Scanned by CamScanner

अ) आज से मैं सोने की थाली मे नही खाऊँगी।
ब) हाथी पर बैठकर किसी जुलूस मे नही जाऊँगा।
क) किसी रानी से शादी नही करूँगा।
ड) किसी देश का राजा नही बनूँगा।

समय के साथ-साथ चारों प्रण एक-एक करके उसके सामने आते है। चरणदास इन समस्याओं का मुकाबला करता है। चरणदास चोर सन् १९७५ मे प्रस्तुत किया गया जिसमे आपनी ताजगी और दिलचस्प व आकर्षण पेशकस से पुरे देश मे तहलका मचा दिया। चरणदास चोर कहानी एक ही समय मे यथार्थवादी भी है और ख्याली भी है। आखिर तक हसँने-हसाँने और भरपूर लुफ्त करने वाली प्रस्तुति अखिर के दस मिनट पहिले अचानक मोड लेती है और रानी के हुक्म से चरणदास चोर को मार दिया जाता है। और नाटक कॉमेडी की तरफ बढ़ते-बढ़ते अचानक ट्रेजेडी मे बदल जाता है बतौर नाटककार हबीब तनवीर ने बडी फनकाराना महारत के साथ कहानी को बुना है और आखिरी मोड दिया है और निर्देशक हबीब तनवीर ने अपने फार्म की भरपूर तवानाई का इस्तेमाल करते हुए इसमें उचित एक नए रूप मे रंगमंच पर उतारा। बतौर अदाकारहबीब तनवीर ने अपने फर्म की जबरदस्त रफतार के साथ-साथ प्रभावी अदाकारी के जरिये एक नए रूप में रंग-मंच पर उतारा। बतौर अदाकार हबीब तनवीर ने हवलदार के किरदार मे बेहतरीन कॉमेडी के नमूने पेश किया और आपनी तेज इफ्रानाए, गति, बॉडी लेंग्वेज और प्रकृतित अदा हावभाव के जरिये ड्रामे की लय को तेज किया। यह कहना बिल्कूल दरूस्त होगा कि 'चरणदास चोर' की इतनी बडी कामयाबी का क्रेडिट इसके आदाकारोंको मिलना चाहिये।

Scanned by CamScanner

चरण दासा चोर हर तरह से दर्शको को संतुप्त करता है उन्हें मनोरंजन देता है। नाच गाने के सर से सराबोर करता है। हँसाता है, झिंडोइता है आसपास को दुनिया की सच्चाई को सामने लाकर रख देता है। धर्म समाज और राजनिती के मैदान में दिखाई देने वाले उतार चढाव से उसे रुबरु करता है. और दर्शक उन सब मे डुबकर खुद को भुलाकर एक तरह से दिली सुकुन और आत्मिक खुशी हासील करते है। चरणदास चोर बिलकुल शुरु से लगातार समाप्ति तक अनेक मौको पर वह आपको अट्टहास के लिए उकसाती है और फिर वहाँ से अप्रत्याशित मोत है।

चरण दास चोर प्रशासन के खिलाफ नाटक है। जिसमें सिस्टम की दुराईयो को उजागर किया गया है। और यह बताया गया है। की किस तरह प्रशासन और प्रशासनिक रवैये का खोखलापन और अन्य बुराइयाँ समाज में अच्छाइयों को पनपने नहीं देती। दिल चस्प बात ये है कि चरणदास चोर जैसा प्रशासन विरोधी नाटक हबिब तनवीर ने सरकारी बात ये है कि सरकारी ग्रान्ट हासिल करके किया था और वो उस वक्त राज्यसभा के सभासद भी थे। चरणदास चोर में गीतों के जरिए एक जगह तो कहा गया था कि चरणदास चोर हमारा है। उससे भी खतरनाक चोर बड़ी बड़ी तागले पगडी वाले है। दूसरी तरफ कहा गया था कि संभलो बहनी चरणदास चोर आ रहा है। इस तरह दर्शको के दिमाग पर जोर डालने के लिए निगाह मे उसकी अटनियत बड़ जाती है। और ये बात सदिंमीत हो जाती है की रानी झुठी खंजाकी चोर, पुलिस झुठी और इस पूरे सडे गले सिस्टम मे एक सच्च फँसा हुआ है जो सच बोलने वाला है वो है चरणदास चोर। नाटक में जब तक समाजी समझ और जागरुकता न होतो हम जैसे के लिए नाटक करणा बेकार है।

Scanned by CamScanner

चरणदास चोर नाटक के अंत में कोरस एक जब चरणदास रानी से विवाह करने से इंकार कर देता है और रानी अपनी झुठी गरिमा को बचाने के लिए चरणदास पर झुठा आरोप लगाकर अपने सैनिको से उसे मरवा देती है तो हबीब साहब उस नाटक को नायक की मृत्यू पर ही नही खत्म करते। वे चरणदास चोर की मृत्यू को उसके जीवन का अंत नही मानते। चरणदास मरने के बाद भी आपने सिध्दांतो में जी रहा है। नाटक के अंत मे कोरस एक गीत गाता है

एक चोर ने रंग जमाया
जी, सच बोल के वह रंग जमाना

चरणदास चोर की मृत्यू का भी उत्सव मनाना बन जाता है। 'चरणदास ने मौत को सामने देखकर भी अंत तक सच बोला और जबरदस्त रंग जमाया जिसका इस नाटक में अनुकीर्तन किया गया है। यही वो पद्यति है जिसमें अत्यंत करुणाजनक प्रसंग भी दर्शक के मन:में आनंद की सृष्टि करने वाले बन जाते है। और अंत: करुणाजनक प्रसंगी भी दर्शक के मन में आंनद की सृष्टि करने वाले बन जाते है और अंतत: उसके मन में विरेचन नही बल्कि रस संचार होता है।

चरणदास की सफलता का कारण लोक कलाकारों की उस शक्ति और ऊर्जा सहज नमनीयता तत्काल संवाद बनाने उस परिस्थिती के अनुकूल आचरण करने की सहजता का उन्होंने परिचय दिया वह अद्भूत था।

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

COMP. 5

MARK ENTRY REPORT

Session : MAR-APR 2020

Course : B.A. SEM 4

Exam Name : CIE

Max Marks : 10

Subject : HINDI PAPER-VI (DSC-1016D2)

Sr. No.	Student Name	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
1	BAGWAN IRAM NISARAHMAD	5003	Locked	9
2	BARAGE KOMAL BABURAO	5008	Locked	9
3	BHOGALE DIPAK DINKAR	5011	Locked	7
4	BHOPALE SHUKRANI VASANT	5012	Locked	10
5	BHOSALE VARAD NARENDRA	5017	Locked	8
6	BODAKE GANGARAM BALU	5018	Locked	9
7	CHAVAN SUJAY SHIVAJI	5023	Locked	9
8	CHAVAN OMKAR LAHU	5024	Locked	9
9	CHOUGALE ANKITA NIVAS	5029	Locked	10
10	CHOUGALE VIJAY ANANDA	5031	Locked	9
11	DEASI DEVYANI SURYJAI	5036	Locked	9
12	DUDHALE PRASHANT SUBHASH	5044	Locked	9
13	GAIKWAD SAMIKSHA SANJAY	5049	Locked	7
14	GAVALI AISHWARYA MANSING	5052	Locked	9
15	GHATAGE SAIPRASAD MAHADEV	5059	Locked	7
16	GODAGE AMRUTA KALYAN	5063	Locked	7
17	GOLANDAJ RAISA LIYAKAT	5064	Locked	10
18	GUNDESHA KOMAL KALPESH	5067	Locked	8
19	INDIKAR KAJAL MALAPPA	5073	Locked	9
20	INGAVALE DEVESH DASHRATH	5074	Locked	10
21	INGAWALE VIKRANT RAMDAS	5075	Locked	7
22	JADHAV MADHAVI BALASO	5078	Locked	7
23	JADHAV PALLAVI BALASO	5079	Locked	7
24	JATHAR KAJAL ANANDA	5084	Locked	9
25	JIRAGE SHAILESH SURESH	5085	Locked	8
26	KAMAT ROHAN MAHAVEER	5091	Locked	9
27	KAMBLE CHETAN SANJAY	5095	Locked	9
28	KAMBLE LAXMAN MAHADEV	5099	Locked	10
29	KAMBLE MANASI AKARAM	5100	Locked	9
30	KAMBLE NEHA RAMESH	5101	Locked	9
31	KAMBLE PALLAVI YASHWANT	5102	Locked	10

Name & Signature of Internal Examiner

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR 416003

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

MARK ENTRY REPORT

Session : MAR-APR 2020 **Exam Name :** CIE

Course : B.A. SEM 4 **Max Marks :** 10

Subject : HINDI PAPER-VI (DSC-1016D2)

Sr. No.	Student Name	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
32	KAMBLE ROHIT MADHUKAR	5106	Locked	8
33	KAMBLE SALONI SARJERAO	5108	Locked	7
34	KAMBLE SHIVANI DILIP	5112	Locked	9
35	KAMBLE SUMEDH VISHWAS	5114	Locked	9
36	KAMBLE SWAPNIL RAJARAM	5115	Locked	9
37	KAMBLE VAIBHAV MAHADEV	5116	Locked	10
38	KAPADE ATUL SADANAND	5119	Locked	10
39	KARANDE KRUSHNAT SUNIL	5120	Locked	8
40	KATKAR ALKESH RAJENDRA	5122	Locked	8
41	KESARE OMKAR AKARAM	5124	Locked	9
42	KHOT PRIYANKA PRABHAKAR	5131	Locked	9
43	KOLI MURALI MAHADEV	5137	Locked	10
44	KOLKAR POOJA DURGAPPA	5140	Locked	10
45	KULKUTAKI RUSHIKESH PRATAP	5142	Locked	8
46	KUMBHAR VIDYA LAKSHMAN	5143	Locked	10
47	LANDGE ROHIT VIVEKANAND	5144	Locked	8
48	MAINA KIRTI KIRAN	5150	Locked	9
49	MALAGE RAKESH BHIMRAO	5151	Locked	8
50	MANE AISHWARYA NITIN	5152	Locked	9
51	MANE PRIYANKA RAJU	5156	Locked	10
52	MIRAJKAR KETAN NANDKISHOR	5164	Locked	7
53	MOHITE SAURABH VIJAY	5166	Locked	9
54	MULLA ASIF BABASAHEB	5171	Locked	9
55	MULLA MUMATAJ DADASO	5172	Locked	9
56	NALAVADE SWAPNIL PRAKASH	5177	Locked	9
57	NARVEKAR MAHESH MUNJUNATH	5182	Locked	8
58	NIGADE SHWETA MADAN	5185	Locked	9
59	NIKAM RUTURAJ BALASO	5186	Locked	7
60	PARIT MAYURI MURALIDHAR	5190	Locked	9
61	PATIL ANIL TATOBA	5198	Locked	8
62	PATIL AVINASH BAJIRAO	5201	Locked	8

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1934 KOLHAPUR-416 003

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

KOLHAPUR

COMP.

MARK ENTRY REPORT

Session : MAR-APR 2020

Exam Name : CIE

Course : B.A. SEM 4

Max Marks : 10

Subject : HINDI PAPER-VI (DSC-1016D2)

Sr. No.	Student Name	Roll No. / Reg No.	Lock Status	Marks
63	PATIL DHANASHREE BALASAHEB	5202	Locked	10
64	PATIL OMKAR MAHADEV	5206	Locked	7
65	PATIL ROHIT VISHWAS	5214	Locked	9
66	PATIL SUSHANT SHIVAJI	5225	Locked	6
67	PATIL VELINDA SATISH	5228	Locked	8
68	PATIL VISHAKHA DATTATRAY	5229	Locked	9
69	PATIL VISHVAJEET VISHNU	5230	Locked	7
70	PHADTARE RUSHIKESH SHIVAJI	5236	Locked	7
71	POWAR SANDHYA SARDAR	5245	Locked	10
72	PUJARI ANIL YALLAPPA	5248	Locked	9
73	RANSING KARAN JITENDRA	5255	Locked	7
74	REDEKAR RUTIKA VASANT	5256	Locked	8
75	RUKADIKAR YASH AJIT	5258	Locked	9
76	SANGALE AKSHAY SHIVAJI	5261	Locked	7
77	SATPUTE GIRISH DADU	5264	Locked	8
78	SAWANT ANUSHKA SITARAM	5269	Locked	9
79	SHINDE AISHWARYA SANDEEP	5279	Locked	9
80	SHINDE TEJAS SAMBHAJI	5284	Locked	9
81	SHITOLE TEJASWINI SOPAN	5285	Locked	10
82	SURYAWANSHI SURAJ SANJAY	5288	Locked	8
83	TIRUKE SURAJ RAMESH	5293	Locked	8
84.	Harish kundlik kotkar	5142		10

Tupet

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416003

Tupet

Name & Signature of Internal Examiner

Name & Signature of External Examiner

Scanned by CamScanner

Name - सुमेघ किशोर कांबळे
Roll N - 5114

Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

B.A. Part- II (Semester-IV)- Internal Test

Hindi (DSC-1016 D 2)

ऐच्छिक प्रश्नपत्र – आधुनिक हिंदी कविता

4/5

Time :

Date : 26/02/2020 Total Marks : 05

सूचनाएँ : सभी प्रश्न अनिवार्य है। हर सवाल आधे अंक के लिए रहेगा।

प्रश्न 1. अ) निम्नलिखित वाक्यों के सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन ....भोर.......।

क) भोर ख) शोर ग) पाच घ) चार

2) होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम ....महावीर.......।

क) नवीन ख) प्रवीन ग) वीर घ) महावीर

3) हम लड़ेंगें साथी, उदास ..इच्छाओं.. के लिए। मौसम

क) इच्छाओं ख) जीवन ग) मौसम घ) बहार

4) 'वो ढल रहा है' ग़ज़ल ..तरकश.. संग्रह से ली गई है।

क) लावा ख) तरकश ग) लौड़कथा घ) लड़ांगे साथी

5) ..शक्ति...... की करे मौलिक कल्पना ।

क) देवी ख) लक्ष्मी ग) शक्ति घ) काली

प्रश्न १.ब) निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में सही उत्तर लिखिए।

1) कवि प्रदीप ने कुल कितने गीत लिखें ?

1750 गीत लिखे

2) कैफ़ी आजमी का वास्तविक नाम क्या है ?

अत्तर हुसेन रिजवी

3) कवि पाश का वास्तविक नाम क्या है ?

अवतार सिंह सिंधू

4) राम हनुमान को यज्ञ के लिए कितने कमल लाने के लिए कहते हैं ?

108 कमल लाने के लिए कहते है।

5) राम को शक्ति की उपासना करने की सलाह कौन देता है ?

~~सुग्रीव~~ जांबवंत ने सलाह देता है।

Scanned by CamScanner

Class B.A.-II Div. sem-4 Roll No. 5114
Suppliment No. सुमेध विश्वास कांबळे Subject हिंदी (OPT)
Test / Tutorial No. Home Assignment

प्र राम की 'शक्तिपूजा' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

प्रस्तुत कविता के रचनाकार 'निराला' जी हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने बँगला में प्रसिद्ध 'राम-रावण युद्ध' संबंधी उस कथा को काव्य का रुप दिया हैं, जिसके अनुसार राम ने रावण के प्रचंड पराक्रम से व्याकुल होकर विजय की प्राप्ती के लिए 'शक्ति' की पुजा की थी। इस कविता की रचना सन 1936 ई. में हुई थी। काव्य सौंदर्य की दृष्टी से यह कविता आधुनिक हिंदी साहित्य विशेषत: छायावादी काव्य की प्रगती की सीमा मानी जा सकती हैं। इसमें राम और रावण के युद्ध के अवसर पर व्यक्ती राम के अंतदर्वदन का वर्णन हैं।

दिन भर घमासान रावण और राम के युद्ध के पश्चात सूर्य अस्त हो गया। दिन के हृदय पर आज का राम-रावण का अनिर्णीत एवं अमर युद्ध लिखा रह गया। दोनों ओर के योद्धा तेज हाथों से धनुष पर बाण चढ़ाकर चलाते थे। उनकी गति बहुत तेज थी। वे वे बाण सैंकडो भालों को रोकने में समर्थ थे, उनकी आवाज से नीला आकाश गूँज रहा था। प्रत्येक पल नए-नए व्यूह बदले जा रहे थे। शत्रु से अनेक प्रकार के कौशल का भेदन किया जा रहा था। राम की सेना राक्षस सेना की कुशलता को नष्ट कर रही थी। क्रुद्ध वानर भयानक शब्द करते हुए राक्षस सेना पर टूट रहे थे। अपने बानों को लक्ष्यभ्रष्ट देख कर राम की कमलनैन

Scanned by CamScanner

आँखो से क्रोध की आग निकलने लगती थी और वह लाल आँखो से रावण के अहंकार का नाश करने के लिए आगे बढ़ते हैं। राम अत्यंत कुशलता के साथ आक्रमण करते थे और रावण इस आक्रमण को मसल रहा था। विश्व को जितने का सामर्थ्य रखने वाले राम अपने दिव्य बाणों की लक्ष्य भ्रष्टता को आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे।

दोनों दल राम और रावण सेना - अपने - अपने शिखारो की ओर लौटे। विजय के दम्भ से राक्षस अपने भारी पैरों से पृथ्वी को कंपित कर रहे थे और उनके महान हर्ष के भारी कोलाहल से आकाश बार-बार विकल हो रहा था। वानर सेना उदासी थी। वह अपने स्वामी राम के चरण - चिन्हों को देखकर इस प्रकार शांती के समय के साथ अपने शिबीरों को लौट रही थी : जैसे कोई बौद्ध साधुओं का दल विभिन्न - दशा में अपनी शिबीर की ओर लौट रहा हो। वातावरण शांत था। संध्या के समय झुके हुए मुख वाले कमल के समान चिंतातूर होकर आगे - आगे लक्ष्मण चल रहे थे और उनके पीछे - पीछे सारे वानर चल रहे थे। आगे - आगे राम अपने मक्खन समान चरणों को पृथ्वी पर टेकते हुए चले जा रहे थे। राम के धनुष की डोरी ढीली पड़ी हुई थी, कमरबंद भी ढीला था, जिसमें तूणीर को रखते थे। दृढ़ता से बाँधी हुई जटाएं और मुकुट अस्त व्यस्त थे और उनकी प्रत्येक लट खुलकर उनकी पीठ पर, बाहुमों और विशाल हृदय पर पड़ गई थी।

रघुकुल - मणी राम पत्थर की शिला पर बैठ गए। और कुशल हनुमान उनके हाथ - पैर धोने के लिए निर्मल जल ले आए। अन्य विर संध्याकालीन विधान तथा ईश्वरोपासना

Scanned by CamScanner

करने के लिए सरोवर के किनारे पर चले गए। और वहाँ से जल्दी से लौट आए। सब राम की आज्ञा की प्रतिक्षा में उनको घेरकर बैठ गए। राम के पीछे लक्ष्मण बैठे हुए थे, सामने विभीषण, धैर्यवान जाम्बवंत तथा सुग्रीव ! चरण कमलो के पास हनुमान एवं अन्य सेनापती अपने - अपने स्थानों पर बैठकर एकटक राम के कमल को जीत लेने वाले उस मुख की ओर देख रहे थे जो अपने पराजय की खिन्नता से स्याह पड़ गया था।

वातावरण की गंभीरता का चित्रण करते हुए कवि आगे कहता - अमावस्या की रात्रि है। आकाश गहरा अंधकार उगल रहा है। अंधेरे के कारण दिशाओं का कभी ज्ञान नहीं रहा। हवा का संचारण शांत है। पीछे न रोका जाने वाला विशाल सागर उद्वेलित होकर गरज रहा है। पर्वत किसी ध्यानमान तपस्वी की भाँति शांत हैं और वहाँ पर केवल एक मशाल जल रही है। यह सारा वातावरण राम के मानसिक गांभिर्य का द्योत्तक है।

स्वभावत: ही शांत राम को बार - बार संशय झकझोर रहा था और वे इस जगे के जिवन में ही रावण की विजय के भय से बार - बार काँप उठते थे। शत्रुओं को दमन करने वाले राम का वह हृदय जो कभी आज तक थका नहीं था, निराश नहीं हुआ था और जो अकेला भी दश हजार, लाखो शत्रुओं में अविचलित रहा था, यद्यापि कल को युद्ध करने के लिए बार - बार विकल हो रहा था। तथापि उनका मन तैयार होकर भी बार - बार अपने को असमर्थ मानकर अपनी पराजय के संशयग्रस्त भाव से मर रहा है।

Scanned by CamScanner

पूर्व रिती पद्धती का आश्रय लेकर वस्तू योजना का विकास दिखाते हुए कवि आगे लिखता है :-

निराशा एवं अवसाद के इन क्षणों में राम के मन में पत्नी सीता की छवि इस प्रकार चमक उठी जैसे अंधकार से घिरे हुए बादल में बिजली चमक जाती है। उन्हें राजा जनक का वह उपवन याद आया, जिसके राम ने एकटक सीता की छवि को देखा था। वही पर लताओं के बीच उन दोनों का प्रथम प्रेमपूर्ण मिलन हुआ था। तब उन दोनों में कोई संभाषण नहीं हुआ; वरन दोनों के नेत्रों ने ही परस्पर एक-दुसरे से मुक संभाषण किया था। पहली बार पलक नव पलकों पर उठी और झुकी थी वहाँ छोटे-छोटे से पत्ते हिल रहे थे। पराग हर्ष के साथ झर रहा था।

राम को जब सीता के प्रथम मिलन की याद आई तो हर्ष के कारण उनका मन रोमांचित हो गया। उनका मन प्रसन्न हो गया और उनका हाथ अपने आप ही उठ गया जैसे वो फिर शिव के धनुष्य को तोड़ना चाहते हैं। सीता के ध्यान में डुबे हुए राम के अधर पर मुस्कुराहट फुट गई और उनके हृदय में विश्व को पराजित करने की भावना भर आई। उन्हें अपने वे दिव्य और मंत्रो से पवित्र किए असंख्य बाण याद आए जो सारे के सारे अपने पंखो को फड़फड़ाते हुए देवईत की भाँती आकाश में उड़ गए थे। अपनी कल्पना में तब राम ने देखा कि सारे राक्षस ताड़का, सुबाहु, विराध, त्रिशिरा, दूषण और खर उनके बाणो की आग में पतंगो की भाँति जल रहे हैं। यहाँ कवि ने मनोवैज्ञानिक पद्धति से राम को अपनत्व का, अपने बल वैभव और शिव शक्ती का स्मरण कराकर उन्हें तेजोहिन किया है। इसके बाद उन्होंने वो विशाल मुर्ती आज उन्होंने रण में रची थी।

Scanned by CamScanner

हनुमान बैठे हुए राम के चरण कमलो को देख रहे थे और सोच रहे थे कि राम के ये चरण युद्ध की समस्त दार्शनिक मान्यताओं के --- ब्रम्ह हैं और नहीं हैं - ही एक-एक रूप हैं जो निर्देश गुणों के समुह हैं, साधना करते समय उपासक सहज भाव से इन्ही चरणों का ध्यान करते हैं। ये चरण साधना के मध्य भी साध्य हैं। यह सोचकर हनुमान ने राम की ओर देखा। राम का बाया हाथ दाहिने पैर तथा दाहिने हाथ की हथेली पर बाया हाथ रखा हुआ था। हनुमान राम के इस स्वरूप में सत्य ब्रम्ह के सच्चिदानंद रूप के दर्शन के भक्ती के आवेश के कारण गडगद हो गया। राम का वह रूप मुक्ति लोक के समान था, जीवन अनंत विजय प्राप्त करता हैं। राम की इन भावमय तथा गंभीर मुद्रा को देखकर हनुमान सहज भक्ती - भावना के साथ द्वेत भावना से युक्त होकर - राम ब्रम्ह हैं और ब्रम्ह से भिन्न भी हैं। राम नाम का जप कर रहे थे। इसी समय राम के नेत्रों से गिरे हुए दो आँसू उनके चरणों पर आ गिरे। हनुमान ने जब उन आँसुओं को देखा तो उन्हें प्रतीत हुआ जैसे आकाश में तारों का समुह चमक उठा हो। इस हृदय को देखकर उन्होंने सोचा की ये राम के नहीं बल्की श्याम के शुभ हस्त हैं और ये दोनो आँसू उन चरणों के मध्य सुशोभीत पीने वाले या तो दो हीरे हैं अथवा दो कौस्तुभ मणियाँ हैं। राम के चरणों पर गिरते हुए आंसुओं को देखकर और

Scanned by CamScanner

यह सोचकर कि ये राम के ही आँसू हैं - राम अत्यंत दुखी एवं विकल हैं। अपार शक्ती के साथ खेलने वाला तथा सागर के समान अथाह हनुमान उत्तेजित हो उठा। उसकी उत्तेजना से प्रेरीत होकर उनके पिता की ओर से भयंकर शोर करते हुए उनचासो पवन एक साथ चलने लगे। जिससे हनुमान के हृदय पर इकट्ठी चिंता रुपी अतुल भाप उड गई; अर्थात उनकी चिंता दुर हो गई क्योंकि उन्हे निश्चित हो गया था कि रावण की संरक्षिका महाशक्ती इस प्रलय से न बच सकेगी। सैंकडो भयंकर चक्कर लगाते हुए भँवर चलने लगे, तरंगो कि भयंकर गति से पहाड उठने लगे, बहने लगे।

इस नवयोजित प्रसंग की सार्थक उद्भावना करते हुए कवि आगे लिखते हैं - हनुमान जब महाकाश में पहुँचे तो वहाँ एक ओर तो रावण की महिमा को बनाए रखने वाली तथा रात के अंधकार समान श्यामवर्ण वाली महाशक्ति थी और दुसरी ओर शिवभक्त राम की पुजा के प्रताप द्वारा तेज का प्रसार करनेवाले हनुमान थे, उस ओर रावण के द्वारा पुजित शिव की शक्ति थी और इस ओर राम की उच्चारण की हुई शिव की वंदना थी, जिसके बल पर अटल होकर हनुमान समस्त आकाश को निगलने का साहस कर रहे थे।

'देवि! अपना तेज रोको! यह वानर नहीं हैं यह कभी काम - वासना से पिडीत होकर नारी के साथ भावस्थ नहीं हुआ हैं। यह महावीर हैं। यह राम की पुजा का साक्षात प्रतीक हैं और अक्षर शरीर वाला हैं। यह राम का परम भक्त हैं और उनकी लीलाओं का साथी हैं। हे देवि! इस पर प्रहार करने से तुम्हारी भयानक हार होगी' और विभिषण की बाते सुनकर राम अत्यंत संयमित एवं स्वभाविक

Scanned by CamScanner

स्वर में बोले --, "हे मित्रवर। अब हमारी युद्ध में विजय नहीं होगी, क्योंकि अब यह नर-वानर का राक्षस से युद्ध नहीं रहा है, बल्कि रावण का निमंत्रण पाकर महाशक्ती उसकी सहायता कर रही है। यह कहते-कहते राम के नेत्र छलछला आए और आँसूओं की बूँद गिरने लगी। उनका कंठ अवरुद्ध हो गया और आगे वे फिर एक भी शब्द न कह सके। यहाँ भी कवि का व्यक्तित्व प्रतिमलित हुआ स्पष्ट दिखाई देता है। राम की इस स्थिती को देखकर लक्ष्मण का तेज चमक चमक उठा। हनुमान राम के दोनों चरणों को पकडकर लज्जा के मारे पृथ्वी में धंस हो गए। पुष्ट भुजाओ वाले जाम्बवंत पत्थर की मुर्ति की भाँति स्थिर बन कर रह गया। सुग्रीव व्याकुल हो गया अपने स्वभाव से संयत होकर राम फिर कहने लगे। मेरी साहस में यह दैविविधान नहीं आया कि अधर्म में लगे हुए रावण की भी महाशक्ती ने क्यों अपना समर्थन लीया है।

इस प्रकार निराला जी ने राम की शक्ति पूजा में अपना और रावण के युद्ध का वर्णन किया हुआ है।

5/5

Scanned by CamScanner